तौज़ीहे मराम

(उद्देश्य का स्पष्टीकरण)

प्रकाशक

नज़ारत नश्र-व-इशाअत

सदर अंजुमन अहमदिय्या क़ादियान

तौज़ीहे मराम

(उद्देश्य का स्पष्टीकरण)

लेखक
हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी
मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम

प्रकाशक
नज़ारत नश्र-व-इशाअत
सदर अंजुमन अहमदिय्या क़ादियान

पुस्तक का नाम : **तौज़ीहे मराम (उद्देश्य का स्पष्टीकरण)**

लेखक : हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

अनुवादक एवं प्रूफ रीडर : अन्सार अहमद बी.ए.बी.एड., मौलवी फ़ाज़िल

संस्करण : फरवरी 2012 ई.

संख्या : 2000

प्रकाशक : नज़ारत नश्र-व-इशाअत
सदर अन्जुमन अहमदिय्या क़ादियान - 143516
ज़िला गुरदासपुर, पंजाब, (भारत)

मुद्रक : फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान

ISBN : 978-81-7912-345-4

प्राक्कथन

हज़रत मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने मसीह तथा महदी होने के बारे में जो महत्वपूर्ण किताबें लिखीं, उनमें से एक ''तौज़ीहे मराम'' है। हज़रत अक़दस ने इस बात को ध्यान में रखते हुए कि आप के मसीह होने के दावे पर विरोधात्मक प्रतिक्रिया तथा आपत्तियों के रंग में लेखनियाँ उठें, उस से पूर्व ही अपने दावे को विस्तृत और तर्कपूर्ण शैली में समझा दिया जाए किताब ''तौज़ीहे मराम'' को 1891 ई. में लिखा जिसके अन्त में शीर्षक ''इस्लाम के विद्वानों हेतु सूचना'' के अन्तर्गत यह घोषणा की :-

''इस ख़ाकसार ने मसीह के समरूप के सम्बन्ध में जो कुछ लिखा है, यह लेख भिन्न-भिन्न रूप से तीन पुस्तकों में लिखा गया है, अर्थात् ''फ़तह इस्लाम'', ''तौज़ीहे मराम'' और ''इज़ाला औहाम'' में । अत: उचित है कि जब तक कोई सज्जन ध्यानपूर्वक इन तीनों पुस्तकों को न देख लें तब तक किसी विरोधात्मक राय प्रकट करने में शीघ्रता न करें ।''

नज़ारत नश्र-व-इशाअत (प्रसार तथा प्रचार विभाग) जन-साधारण के लाभार्थ इस पुस्तक को अक्षरश: प्रकाशित कर रही है । प्रार्थना है कि अल्लाह तआला इसे लोगों के लिए लाभप्रद बनाए । यथास्तु !

नाज़िर नश्र–व–इशाअत
क़ादियान

घोषणा

इस पुस्तक के पश्चात एक अन्य पुस्तक भी कुछ दिनों में छप कर तैयार हो जाएगी, जिसका नाम ''इज़ाला औहाम'' है । वह पुस्तक ''फ़तह इस्लाम'' का तृतीय भाग है ।

घोषणाकारी

मिर्ज़ा गुलाम अहमद अफ़ा अन्हो

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्हम्दो लिल्लाहे वस्सलामो अला इबादिहिल्लज़ीनस्तफ़ा ।

मसीह का संसार में दोबारा आगमन

मुसलमानों और ईसाइयों का कुछ मतभेदों के साथ यह विचार है कि ''हज़रत मसीह इब्ने मरयम (मरयम के पुत्र) इसी भौतिक शरीर के साथ आकाश की ओर उठाए गए हैं तथा वह किसी युग में आकाश से उतरेंगे।'' मैं इस विचार का ग़लत होना अपनी इसी पुस्तक में लिख चुका हूँ तथा यह भी वर्णन कर चुका हूँ कि इस नुज़ूल (उतरना) से अभिप्राय वास्तव में मसीह इब्ने मरयम (मरयम के पुत्र मसीह) का उतरना नहीं अपितु रूपक के तौर पर मसीह के एक समरूप के आने की सूचना दी गई है। जिसे ख़ुदा तआला की सूचना और इल्हाम (ईशवाणी) के अनुसार चरितार्थ करने वाला यही ख़ाकसार है । मुझे निश्चय ही ज्ञात है कि मेरी इस राय के प्रकाशित होने के पश्चात जिस पर मैं नितान्त स्पष्ट इल्हाम से खड़ा किया गया हूँ । बहुत सी लेखनियाँ विरोध स्वरूप उठेंगी तथा जन साधारण में एक आश्चर्य और इन्कार से भरा हुआ कोलाहल उत्पन्न होगा। मेरी इच्छा थी कि व्यवहारिक तौर पर बात को बढ़ावा देने से पृथक रहूँ तथा आपत्तियों के प्रस्तुत होने के समय आपत्ति करने वालों के विचारों की वर्तमान परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए उनके निवारण हेतु कारणों और तर्कों को विस्तारपूर्वक प्रस्तुत करूँ । परन्तु मुझे अब इस इरादे में यह दोष प्रतीत होता है कि मेरे लेखन में विलम्ब की स्थिति में न केवल जन सामान्य अपितु मुसलमानों के विशिष्ट भी, जिनमें उनके कुछ मौलवी हैं जो अपनी अज्ञानता के कारण जो उनके पतन का मुख्य कारण बना हुआ है तथा एक पुराने विचार से प्रभावित होने के कारण व्यर्थ में ही मेरी बात के खण्डन हेतु वादी की भाँति खड़े होंगे तथा अपने दावे के समर्थन में बहरहाल उसी दावे की सच्चाई सिद्ध करना चाहेंगे । अतः वादी होकर मुकाबले पर खड़े हो जाना उनके लिए बहुत बड़ी बाधा बन जाएगी, जिससे बाहर निकलना तथा अपनी प्रसिद्ध की हुई राय से पीछे हटना उनके लिए कठिन ही नहीं अपितु असंभव होगा क्योंकि सदा यही देखा जाता है कि जब कोई मौलवी गवाहों के समक्ष एक राय को प्रकट कर देता है और उसका अपना अंतिम निर्णय ठहराता है तो फिर उस राय से

पीछे हटना उसे मृत्यु से भी निकृष्ट दिखाई देता है। अत: मैंने ख़ुदा के लिए दया करते हुए यह चाहा कि इससे पूर्व कि वे मुकाबले पर आकर दुराग्रह और हठधर्मी में ग्रसित हो जाएँ उनको स्वयं ही ऐसे स्पष्ट और तर्कसंगत ढंग से समझा दिया जाए जो एक बुद्धिमान, न्यायप्रिय और सत्याभिलाषी की संतुष्टि के लिए पर्याप्त हो। यदि बाद में पुन: लिखने की आवश्यकता होगी तो कदाचित ऐसे लोगों के लिए वह आवश्यकता सामने आएगी जो अत्यन्त सरल और अल्पबुद्धि वाले हैं जिनको आसमानी किताबों के रूपकों, परिभाषाओं और जटिल तथा सूक्ष्म व्याख्याओं का कुछ भी ज्ञान नहीं अपितु छुआ तक नहीं और **ला यमस्सोहू** (उसे छू भी नहीं सकता) के नहीं के अन्तर्गत हैं।

अब पहले हम अपने बयान की सफ़ाई के लिए यह लिखना चाहते हैं कि बाइबल, हमारी हदीसों और भविष्यवाणियों की किताबों की दृष्टि से जिन नबियों की इसी भौतिक शरीर के साथ आसमान पर जाने की कल्पना की गई है, वे दो नबी हैं। एक 'यूहन्ना' जिसका नाम 'एलिया' और 'इदरीस'❶ भी है। दूसरे 'मसीह इब्ने मरयम' जिन्हें 'ईसा' और 'यसू' भी कहते हैं। इन दोनों नबियों के सन्दर्भ में पुराने और नए अहदनामे की कुछ पुस्तकें वर्णन कर रही हैं कि वे दोनों आसमान की ओर उठाए गए तथा पुन: किसी युग में पृथ्वी पर उतरेंगे और तुम उनको आसमान से आते देखोगे। (देखो इन्जील मती बाब-11, आयत-14, तथा मती बाब-17, आयत-13) इन्हीं किताबों से मिलते-जुलते कुछ शब्द नबी करीम (स.अ.व.) की हदीसों में भी पाए जाते हैं, परन्तु हज़रत 'इदरीस'[1] के सन्दर्भ में बाइबल में जो 'यूहन्ना' या 'एलिया' के नाम से संबोधित किए गए हैं, इन्जील में यह निर्णय दिया गया है कि ज़करिया के बेटे 'यह्या' के पैदा होने से उन का आसमान से उतरना घटित हो गया है। अत: हज़रत मसीह स्पष्ट शब्दों में फ़रमाते हैं कि **''यूहन्ना जो आने वाला था यही है चाहो तो स्वीकार करो।''** अत: एक नबी के निर्णय से एक आसमान पर जाने वाले और फिर किसी समय उतरने वाले अर्थात 'यूहन्ना' का मुकद्दमा तो समाप्त हो गया तथा दोबारा उतरने की वास्तविकता और विवरण ज्ञात हो गया। अत: समस्त ईसाइयों की

❶ इल्यास पढ़ा जाए - शम्स।

सर्वमान्य आस्था जो इन्जील की दृष्टि से होना चाहिए, यही है कि 'यूहन्ना' जिस के आसमान से उतरने की प्रतीक्षा थी वह हज़रत मसीह के समय में आसमान से इस प्रकार उतर आया कि 'ज़करिया' के घर में उसी स्वभाव और विशेषता का पुत्र हुआ जिसका नाम 'यहया' था । जब कि यहूदी उस के उतरने की अब तक प्रतीक्षा कर रहे हैं । उन की धारणा है कि वह वास्तव में आसमान से उतरेगा । प्रथम बैतुल मुक़द्दस के मीनारों पर उसका अवतरण होगा, फिर वहाँ से यहूदी लोग एकत्र होकर उस को किसी सीढ़ी इत्यादि के द्वारा नीचे उतार लेंगे । जब यहूदियों के सामने वह व्याख्या प्रस्तुत की जाए जो हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम ने 'यूहन्ना' के उतरने के सन्दर्भ में की है तो वे तुरन्त क्रोधित होकर हज़रत मसीह और ऐसे ही हज़रत 'यह्या' के पक्ष में अनुचित बातें सुनाते हैं तथा उस नबी के कथन को एक नास्तिकता पूर्ण विचार मानते हैं । बहरहाल आसमान से उतरने का शब्द जो एक भावार्थ रखता है, मसीह के कथन से उसकी वास्तविकता प्रकट हुई तथा उनके ही कथन से 'यूहन्ना' के आसमान से उतरने का विवाद तय हुआ और यह बात स्पष्ट हो गई कि अन्ततः उतरे तो किस प्रकार उतरे । परन्तु मसीह के उतरने के सन्दर्भ में अब तक बड़े जोश से वर्णन किया जाता है कि वह उत्तम मूल्यवान कपड़ों की राजाओं वाली पोशाक पहने हुए[1] फ़रिश्तों (ख़ुदा के दूत) के साथ आसमान से उतरेंगे । परन्तु इस पर इन दोनों क़ौमों की सहमति नहीं कि कहाँ उतरेंगे। श्रेष्ठ मक्का शरीफ़ में या लन्दन के किसी गिरजा घर में या मास्को के शाही कलीसिया (रोमन कैथोलिक ईसाइयों का पूजा गृह - अनुवादक) में । यदि ईसाइयों के प्राचीन विचारों का अनुसरण बाधक न हो तो वे मुसलमानों के संबंध में अति शीघ्र समझ सकते हैं कि मसीह का उतरना उसी व्याख्या के अनुकूल होना चाहिए जो स्वयं हज़रत मसीह के कथन से स्पष्ट शब्दों में ज्ञात हो चुकी है, क्योंकि यह संभव नहीं कि एक ही प्रकार के दो मामलों की दो विपरीत अर्थों में कल्पना की जा

हाशिया :- ❶ ये कपड़े पश्मीना या रेशम के होंगे ? जैसे चूड़ियाँ, गुलबदन, अतलस, कमख़्वाब, मलमल, जाली, चारख़ाना और आसमान में किसने बुने और किसने सिए होंगे । अब तक मुसलमानों या ईसाइयों में से किसी ने इसका कुछ पता नहीं दिया । (इसी से)

सके । यह बात बुद्धिमान लोगों के विचार-योग्य है कि यदि हज़रत मसीह की वह व्याख्या जो उन्होंने 'यूहन्ना' के आसमान से उतरने के सन्दर्भ में की है वास्तव में उचित है, तो क्या हज़रत मसीह के उतरने के मुक़द्दमे में जो उसी पहले मुक़द्दमे के अनुरूप है उसी व्याख्या को काम में नहीं लाना चाहिए ? जिस परिस्थिति में एक नबी इस गुप्त रहस्य की मूल वास्तविकता को प्रकट कर चुका है तथा प्रकृति का नियम भी इसी को चाहता और इसी को स्वीकार करता है । तो फिर इस स्वच्छ और सीधे मार्ग को त्याग कर एक जटिल और आपत्तिजनक मार्ग अपनी ओर से निकालना क्योंकर स्वीकार करने योग्य ठहर सकता है ? क्या ज्ञानवान और ईमानदार लोगों की अन्तरात्मा जिसे मसीह के कथन से भी पूरा-पूरा समर्थन मिल गया है किसी अन्य ओर अपना मुख कर सकता है ? मसीही लोग तो इस समय से दस वर्ष पूर्व अपनी यह भविष्यवाणी भी अंग्रेज़ी अख़बारों के माध्यम से प्रकाशित कर चुके हैं कि तीन वर्ष तक मसीह आसमान से उतरने वाला है । अब जो ख़ुदा तआला ने उस उतरने वाले का निशान दिया तो मसीहियों का कर्तव्य है कि सर्वप्रथम वे ही उसे स्वीकार करें ताकि अपनी भविष्यवाणी के स्वयं ही झुठलाने वाले न ठहरें ।

ईसाई लोग इस बात को भी स्वीकार करते हैं कि हज़रत मसीह उठाए जाने के पश्चात् स्वर्ग में प्रवेश कर गए । **लूका** की इन्जील में हज़रत मसीह स्वयं एक चोर को सांत्वना देकर कहते हैं कि ''आज तू मेरे साथ स्वर्ग में प्रवेश करेगा ।''❶ तथा ईसाइयों की यह आस्था भी सर्वमान्य है कि कोई व्यक्ति स्वर्ग में प्रवेश करके फिर उस से निकाला नहीं जाएगा, यद्यपि वह कैसा ही निम्नस्तर का व्यक्ति हो । अत: यही आस्था मुसलमानों की भी है । अल्लाह तआला क़ुर्आन शरीफ़ में फ़रमाता है- **वमा हुम मिन्हा बिमुख़्रजीन**❷ अर्थात जो लोग स्वर्ग में दाख़िल किए जाएँगे फिर उस से निकाले नहीं जाएँगे । क़ुर्आन शरीफ़ में यद्यपि हज़रत मसीह के स्वर्ग में प्रवेश करने का स्पष्ट रूप से कहीं उल्लेख नहीं, परन्तु उनकी मृत्यु प्राप्ति का तीन स्थानों पर उल्लेख है❸

हाशिया :- ❶ देखो इन्जील लूका अध्याय 23, आयत 43 ।

❷ अल हिज्र : 49 ।

हाशिया :- ❸ (क) अल्लाह तआला फ़रमाता है - ''**फ़लम्मा तवफ़्फ़यतनी**

पवित्र बन्दों के लिए मृत्यु को प्राप्त होना तथा स्वर्ग में प्रवेश करना एक ही आदेश में है, क्योंकि इस आयत के अनुसार - **''क़ीलदख़ुलिल जन्नत''**❶ **''वदख़ुली जन्नती''**❷ वे अविलम्ब स्वर्ग में दाख़िल किए जाते हैं । अब मुसलमानों और ईसाइयों दोनों वर्गों पर अनिवार्य है कि इस बात को ध्यानपूर्वक परखें कि क्या यह सम्भव है कि मसीह जैसा ख़ुदा का सानिध्य रखने वाला बन्दा स्वर्ग में प्रवेश करके फिर उस से बाहर निकाल दिया जाए ? क्या इसमें ख़ुदा तआला की उस प्रतिज्ञा का भंग करना नहीं जो उसकी समस्त पवित्र किताबों में निरन्तरता और विवरण के साथ उपलब्ध है कि स्वर्ग में प्रवेश करने वाले, फिर उस से निकाले नहीं जाएँगे ? क्या ऐसी महान और अटूट प्रतिज्ञा का भंग हो जाना ख़ुदा तआला की समस्त प्रतिज्ञाओं पर एक भीषण भूकम्प नहीं लाता ? अत: निश्चय समझो कि ऐसी आस्था रखने में न केवल मसीह पर अनुचित संकट लाओगे अपितु उन व्यर्थ बातों से ख़ुदा तआला का अपमान और नितान्त अनादर भी होगा । इस बात को बड़े ध्यान और गहरी दृष्टि से देखना चाहिए कि एक तुच्छ आस्था के जबकि उस से मुक्ति प्राप्त करने के लिए रूपक का मार्ग विद्यमान है, बड़ी-बड़ी धार्मिक सच्चाइयाँ आप के हाथ से निकल जाती हैं । वास्तव में यह एक ऐसी विकारयुक्त आस्था है जिसमें सहस्त्रों दोष अत्यन्त जटिल रंग में लगे हुए हैं और इससे विरोधियों को उपहास के लिए अवसर प्राप्त होता है । मैंने पहले भी उल्लेख किया है कि यही चमत्कार मक्का के काफ़िरों ने हमारे सरदार और स्वामी हज़रत ख़ातमुल अंबिया स.अ.व. से मांगा था कि हमारे सामने आसमान पर चढ़ें और हमारे सामने ही उतरें । उन्हें उत्तर दिया गया था कि **''क़ुल सुबहाना रब्बी''**❸ अर्थात् ख़ुदा तआला की नीतिगत शान इस से पवित्र है कि ऐसे खुले-खुले अद्भुत चमत्कार इस परीक्षा गृह (अर्थात भौतिक जगत) में दिखाए तथा

(शेष हाशिया) :- **कुन्ता अन्तर्रक़ीबा अलयहिम''** (सूर: माइद: : 118) (ख) **व इम्मिन अह्लिल किताबे इल्ला लयोमिनन्ना बिही क़ब्ला मौतिही** (सूर:, अन्-निसा : 160) (ग) **इज़ क़ालल्लाहो या ईसा इन्नी मुतवफ़्फ़ीका व राफ़िओका इलय्या** (सूर: आले इमरान : 56) (इसी से) ।

❶ यासीन : 27 । ❷ अल फ़ज्र : 31 । ❸ बनी इस्राईल : 94 ।

परोक्ष पर ईमान की नीति को नष्ट कर दे ।

अब मैं कहता हूँ कि जो बात आँहज़रत स.अ.व. के लिए, जो समस्त नबियों से श्रेष्ठतम थे वैध नहीं तथा इसे ख़ुदा के नियम और स्वभाव से बाहर समझा गया, वह हज़रत मसीह के लिए वैध क्योंकर हो सकता है ? यह अत्यन्त अनादर होगा कि हम आँहज़रत स.अ.व. के सन्दर्भ में एक चमत्कार की अनुमान से परे कल्पना करें फिर उसी चमत्कार को हज़रत मसीह के सन्दर्भ में अनुमान के अनुकूल स्वीकार कर लें । क्या किसी सच्चे मुसलमान से इस प्रकार की धृष्टता हो सकती है ? कदापि नहीं । यह बात भी प्रकट करने योग्य है कि यह उपर्युक्त विचार जो कुछ समय से मुसलमानों में फैल गया है सत्य तो यह है कि हमारी किताबों में इस का नामो निशान तक नहीं अपितु नबी करीम स.अ.व. की हदीसों की भ्रान्ति का यह एक अनुचित परिणाम है जिस के साथ कई व्यर्थ टिप्पणियाँ लगा दी गई हैं तथा निर्मूल विषयों से उन्हें सुशोभित किया गया है और समस्त वे मामले दृष्टि से ओझल कर दिए गए हैं जो मूल उद्देश्य की ओर पथ-प्रदर्शक हो सकते हैं । इस सन्दर्भ में अत्यन्त स्वच्छ और स्पष्ट वह हदीस है जो इमाम मुहम्मद इस्माईल बुख़ारी रहमतुल्लाह ने अपनी सही बुख़ारी में अबू हुरैरह रज़ि. के माध्यम से वर्णन की है और वह यह है - ''**कैफ़ा अन्तुम इज़ा नज़लब्नो मरयम फ़ीकुम व इमामोकुम मिन्कुम**'' अर्थात् उस दिन तुम्हारा क्या हाल होगा जब इब्ने मरयम (मरयम का पुत्र) तुम में उतरेगा वह कौन है ? वह तुम्हारा ही एक इमाम होगा जो तुम में से ही उत्पन्न होगा । अतः इस हदीस में आँहज़रत स.अ.व. ने स्पष्ट फ़रमा दिया कि ''इब्ने मरयम से यह मत विचार करो कि वास्तव में इब्ने मरयम ही उतरेगा अपितु यह नाम रूपक के तौर पर वर्णन किया गया है अपितु वास्तविकता यह है क वह तुम में से, तुम्हारी ही क़ौम में से तुम्हारा एक इमाम होगा जो इब्ने मरयम के स्वभाव पर उत्पन्न किया जाएगा'' इस स्थान पर पुरानी विचारधारा के लोग इस हदीस का अर्थ इस प्रकार करते हैं कि जब हज़रत मसीह आसमान से उतरेंगे तो वे अपने नबी होने के पद से त्यागपत्र देकर आएँगे । इन्जील से उनका कोई मतलब नहीं होगा मुहम्मद की उम्मत में प्रवेश करके क़ुर्आन शरीफ़ का अनुसरण करेंगे, पाँच समय की नमाज़

पढ़ेंगे तथा मुसलमान कहलाएँगे !!! परन्तु यह स्पष्ट नहीं किया गया कि क्यों और किस कारण से अवनति की यह स्थिति उनके सामने आएगी। बहरहाल हमारे मुहम्मदी मुसलमान भाइयों ने इतना तो स्वयं ही स्वीकार कर लिया है कि इब्ने मरयम उस दिन एक मुसलमान पुरुष होगा जो स्वयं को मुहम्मद की उम्मत में से प्रकट करेगा तथा अपने नबी के पद का नाम भी न लेगा जो उसे पहले प्रदान किया गया था और वास्तव में यही एक बड़ी कठिनाई है जो रूपक को यथार्थ पर अनुमान करके हमारे भाइयों के सामने आ गई है। जिसके कारण उन्हें एक नबी का अपने नुबुव्वत के पद से वंचित हो जाने का निर्णय करना पड़ा। यदि वे इन स्पष्ट और उचित अर्थों को स्वीकार कर लें, जो आँहज़रत स.अ.व. के पवित्र शब्दों में पाए जाते हैं जिनके अनुसार पहले हज़रत मसीह 'यूहन्ना' नबी के संबंध में बयान कर चुके हैं तो इन समस्त आडम्बरयुक्त कठिनाइयों से मुक्ति पा जाएँगे। न हज़रत मसीह की आत्मा (रूह) को स्वर्ग से निकालने की आवश्यकता होगी और न उस पवित्र नबी की नुबुव्वत की पृथकता का निर्णय करना पड़ेगा तथा न आँहज़रत स.अ.व. की प्रतिष्ठा में न व्याजनिन्दा के करने वाले होंगे और न क़ुर्आनी आदेशों के निरस्तीकरण का इक़रार करना पड़ेगा।

कदाचित हमारे भाइयों का अन्तिम बहाना यह होगा कि सही हदीसों में हज़रत मसीह की निशानियों के सन्दर्भ में कुछ शब्द वर्णन किए गए हैं उनको चरितार्थ कैसे करें। उदाहरणतया लिखा है कि जब मसीह आएगा तो सलीब को तोड़ेगा और जिज़िया (कर)[1] को समाप्त कर देगा और सुअरों की हत्या कर देगा तथा वह उस समय आएगा जब यहूदियत और ईसाइयत की बुरी आदतें मुसलमानों में फैली हुई होंगी। मैं कहता हूँ कि सलीब के तोड़ने से अभिप्राय कोई प्रत्यक्ष युद्ध नहीं अपितु आध्यात्मिक तौर पर सलीबी धर्म का खण्डन तथा उस का असत्य होना सिद्ध करके दिखा देना है। जिज़िया (कर) समाप्त कर देने का अभिप्राय स्वयं स्पष्ट है जो यह संकेत है कि उन दिनों में हृदय स्वयं सत्य की ओर खींचे जाएँगे,

[1] इस्लामी शासन में वह कर जो मुसलमानों के अतिरिक्त लोगों से उनकी सुरक्षा के दायित्व के बदले में लिया जाता था जो तीन रुपए वार्षिक से उन्नीस रुपए वार्षिक तक होता था। (अनुवादक)

किसी युद्ध की आवश्यकता नही होगी, स्वयं ही ऐसी वायु चलेगी कि लोगों के समूह के समूह भीड़ रूप में इस्लाम धर्म में प्रवेश करते जाएँगे । जब इस्लाम धर्म में प्रवेश करने का द्वार खुल जाएगा तथा एक संसार का संसार इस धर्म को स्वीकार कर लेगा तो फिर 'कर' किस से लिया जाएगा, परन्तु यह सब एक बार में ही घटित नहीं होगा । हाँ अभी से उसकी नींव डाली जाएगी । सुअरों से अभिप्राय वे लोग हैं जिनमें सुअरों की आदतें हैं वे उस दिन सबूत और तर्क से पराजित किए जाएँगे तथा व्यापक और अत्यन्त स्पष्ट तर्कों की तलवार उन का वध करेगी न कि यह कि एक पवित्र नबी जंगलों में सुअरों का शिकार खेलता फिरेगा ।

हे मेरी प्रिय क़ौम ! ये सब रूपक हैं, जिन्हें ख़ुदा तआला की ओर से बुद्धि दी गई है वे न केवल सुगमता से अपितु एक प्रकार की अभिरूचि से उनको समझ जाएँगे । ऐसे उत्तम और पूर्ण काल्पनिक शब्दों को यथार्थ पर चरितार्थ जैसे एक सुन्दर प्रियतम का एक राक्षस की शक्ल में आकृति खींचना है । यथोचित वार्तालाप का सम्पूर्ण आधार सूक्ष्म रूपकों पर होता है । इसी कारण ख़ुदा तआला के कलाम (वाणी) ने भी जो समस्त कलामों में यथोचित सुगम है जिस कदर रूपकों का प्रयोग किया है अन्य किसी के कलाम में यह अनुपम शैली नहीं है । अब प्रत्येक स्थान और प्रत्येक अवसर पर इन पवित्र रूपकों को यथार्थ पर चरितार्थ करते जाना जैसे उस चमत्कारिक शैली वाले कलाम (वाणी) को धूल में मिलाना है । अतः इस प्रकार से न केवल ख़ुदा तआला के सुगम और सरलतम कलाम का मूल उद्देश्य अस्त-व्यस्त होता है अपितु साथ ही उस कलाम की उच्चस्तरीय सुगमता को भी बरबाद कर दिया जाता है । व्याख्या के सुन्दर और मनोरंजक तरीक़े वे होते हैं जिन में वक्ता की यथोचित बोलने की श्रेष्ठ शैली तथा उसके आध्यात्मिक और उच्च इरादों का भी ध्यान रहे न यह कि नितान्त निम्नस्तरीय, कुरूप और बेढ़ंगे मोटे अर्थ जो व्याजनिन्दा के आदेश में हों, अपनी ओर से बनाए जाएँ तथा ख़ुदा तआला के पवित्र कलाम को जो पवित्र और सूक्ष्म रहस्यों को समेटे हुए है केवल असभ्य शब्दों तक सीमित समझ लिया जाए । हम नहीं समझते कि उन नितान्त सूक्ष्म रहस्यों के मुकाबले पर जो ख़ुदा तआला के कलाम में होने चाहिएँ और प्रचुरता के साथ हैं क्यों कुरूप, मोटे और घृणित अर्थ पसन्द किए

जाते हैं ? क्यों उन अनुपम अर्थों का महत्व नहीं जो ख़ुदा तआला के नीतिगत वैभव तथा उसके उच्च स्तरीय कलाम के अनुकूल हैं ? हमारे विद्वानों के मस्तिष्क इस व्यर्थ अवज्ञा से क्यों भरे हुए हैं कि वह ख़ुदाई दार्शनिकता के निकट आना नहीं चाहते ? जिन लोगों ने इन आविष्कारों में अपना रक्त और पसीना एक कर दिया है, उनको निसन्देह हमारे इस वर्णन से इन्कार नहीं अपितु आनन्द आएगा तथा एक ताज़ा सच्चाई प्राप्त होगी जिसे वे बड़े ज़ोर-शोर के साथ क़ौम में वर्णन करेंगे तथा प्रजा को एक आध्यात्मिक लाभ पहुँचाएँगे, परन्तु जिन्होंने केवल सरसरी दृष्टि तक अपनी सोच और बुद्धि को समाप्त कर रखा है वे इसके अतिरिक्त कि निरर्थक आरोपों की संख्या बढ़ाएँ तथा अनुचित महाप्रलय स्थापित करें, अपने अस्तित्व से इस्लाम को और कुछ लाभ नहीं पहँचा सकते ।

अब हम यह वर्णन करना चाहते हैं कि हमारे पथ-प्रदर्शक, सरदार, स्वामी जनाब ख़तमुलमुरसलीन ने मसीह प्रथम और मसीह द्वितीय के मध्य अन्तर स्थापित करने के लिए केवल यही नहीं कहा कि मसीह द्वितीय एक मुसलमान पुरुष होगा तथा कुर्आनी शरीअत के अनुसार कार्य करेगा और मुसलमानों की भाँति रोज़ा, (उपवास) नमाज़ इत्यादि कुर्आनी आदेशों का पाबन्द होगा तथा मुसलमानों में उत्पन्न होगा और उन का इमाम (पेशवा) होगा, कोई अलग से धर्म नहीं लाएगा, अलग से किसी नुबुवव्वत का दावा नहीं करेगा अपितु यह भी प्रकट किया है कि मसीह प्रथम और मसीह द्वितीय की रूप रेखा में भी स्पष्ट अन्तर होगा । चुनाँचै मसीह प्रथम की रूप रेखा जो आँहज़रत स.अ.व. को मैराज की रात में दिखाई दी वह यह है - दरम्याना क़द, लाल रंग, घुंघराले बाल और चौड़ी छाती है । (देखो सही बुख़ारी पृष्ठ : 498) परन्तु इसी किताब में मसीह द्वितीय की रूप रेखा जनाब ममदूह (जिसकी प्रशंसा की जाए) ने यह वर्णन की है कि उसका रंग गेहुआं है, उसके बाल घुंघराले नहीं, कानों तक लटकते हैं । अब हम सोचते हैं कि क्या ये दोनों में अन्तर करने वाले लक्षण जो मसीह प्रथम और मसीह द्वितीय में आँहज़रत स.अ.व. ने वर्णन किए हैं पर्याप्त तौर पर सन्तुष्ट नहीं करते कि मसीह प्रथम और है तथा मसीह द्वितीय और । इन दोनों को इब्ने मरयम के नाम से पुकारना एक सूक्ष्म रूपक है जो स्वभाव में एकरूपता तथा आध्यात्मिक विशेषता की दृष्टि से प्रयोग किया गया है । यह

स्पष्ट है कि आन्तरिक विशेषता में एकरूपता की दृष्टि से दो नेक व्यक्ति एक ही नाम के पात्र हो सकते हैं और इसी प्रकार दो दुष्ट व्यक्ति भी दुष्टता के एक ही बुरे तत्त्व में एक समान होने के कारण एक दूसरे के उत्तराधिकारी कहला सकते हैं । मुसलमान लोग जो अपने बच्चों के नाम अहमद, मूसा, ईसा, सुलेमान और दाऊद इत्यादि रखते हैं तो वास्तव में उन्हें इसी शगुन का विचार होता है जिस से शुभ शगुन के तौर पर यह इरादा किया जाता है कि ये बच्चे भी उन बुज़ुर्गों का आध्यात्मिक रंग और विशेषता ऐसी पूर्णरूप से उत्पन्न कर लें जैसे उन्हीं का रूप हो जाएं । इस स्थान पर यदि यह आरोप प्रस्तुत किया जाए कि मसीह का समतुल्य भी नबी होना चाहिए क्योंकि मसीह नबी था । इसका प्रथम उत्तर तो यही है कि आने वाले मसीह के लिए हमारे सरदार स्वामी (स.अ.व.) ने नुबुव्वत शर्त नहीं ठहराई अपितु स्पष्ट तौर पर यही लिखा है कि वह एक मुसलमान होगा तथा सामान्य मुसलमानों के अनुसार क़ुर्आनी शरीअत का पाबन्द होगा, इससे अधिक कुछ भी प्रकट नहीं करेगा कि मैं मुसलमान हूँ तथा मुसलमानों का इमाम हूँ । इसके अतिरिक्त इसमें कुछ सन्देह नहीं कि यह ख़ाकसार ख़ुदा तआला की ओर से इस उम्मत के लिए मुहद्दिस होकर आया है और मुहद्दिस भी एक अर्थ की दृष्टि से नबी ही होता है यद्यपि उसके लिए पूर्ण नुबुव्वत नहीं । तथापि आंशिक तौर पर वह एक नबी ही है क्योंकि वह ख़ुदा तआला से वार्तालाप करने का एक गौरव रखता है । परोक्ष के मामले उस पर प्रकट किए जाते हैं तथा रसूलों और नबियों की वह्यी की भाँति उसकी वह्यी को भी शैतानी हस्तक्षेप से पवित्र किया जाता है, शरीअत का सार उस पर खोला जाता है, बिल्कुल नबियों की भाँति आदिष्ट होकर आता है और नबियों की भाँति उसका कर्त्तव्य होता है कि स्वयं को उच्च स्वर में प्रकट करे तथा उसका इन्कार करने वाला एक सीमा तक दण्ड के योग्य ठहरता है । नुबुव्वत का अर्थ इस के अतिरिक्त और कुछ नहीं कि उपर्युक्त बातें उसमें पाई जाएँ ।

यदि यह बहाना प्रस्तुत हो कि नुबुव्वत का द्वार बन्द है और नबियों पर जो वह्यी उतरती है उस पर मुहर लग चुकी है । मैं कहता हूँ कि न तो प्रत्येक प्रकार से नुबुव्वत का द्वार बन्द हुआ है और न प्रत्येक प्रकार से वह्यी पर मुहर लगाई गई है अपितु आंशिक तौर पर वह्यी और नुबुव्वत

का इस स्वर्गीय उम्मत के लिए हमेशा द्वार खुला है, परन्तु इस बात को हार्दिक तौर पर स्मरण रखना चाहिए कि यह नुबुव्वत जिसका सिलसिला हमेशा के लिए जारी रहेगा पूर्ण नुबुव्वत नहीं है अपितु जैसा कि मैं अभी वर्णन कर चुका हूँ कि वह केवल एक आंशिक नुबुव्वत है जो दूसरे शब्दों में मुहद्दिसियत के नाम से नामित है जो कामिल इन्सान के अनुसरण से प्राप्त होती है जो नुबुव्वत के समस्त और सम्पूर्ण विशेषताओं को एकत्र करने वाला है अर्थात प्रशंसनीय विशेषताओं वाले अस्तित्व हज़रत हमारे सरदार तथा स्वामी मुहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व. ।

فاعلم ارشدک الله تعالیٰ انّ النّبی محدّث والمحدّث نبی باعتبار حصول نوع من انواع النبوّت۔ وقد قال رسول الله صلی الله علیه وسلم لم یبق من النبوّة الاّ المبشرات ای لم یبق من انواع النّبوة الا نوعٌ واحدٌ وهی المبشرات من اقسام الرّؤیا الصادقة والمکاشفات الصحیحه والوحی الّذی ینزل علیٰ خواص الاولیاء والنّور الذی یتجلّی علیٰ قلوب قومٍ موجع۔ فانظر ایّها الناقد البصیر اَیُفْهَمُ من هٰذا سدّ باب النّبوّة علیٰ وجه کلی بل الحدیث یدلّ علیٰ انّ النّبوة التامة الحاملة لوحی الشریعة قد انقطعت ولکن النبوة الّتی لیس فیهاالا المبشّرات فهی باقیة الیٰ یومِ القیامة لا انقطاع لها ابداً۔ وقد علمتَ و قراتَ فی کتب الحدیث انّ الرّؤیا الصّالحة جزءٌ من ستة واربعین جزء من النّبوة ای من النّبوّة التامة فلمّا کان للرّؤیا نصیبًا من هٰذه المرتبة فکیف الکلام الذی یوحی من اللّٰه تعالیٰ الی قلوب المحدّثین فاعلم ایّدک اللّٰه انّ حاصل کلامنا ان ابواب النّبوّة الجزئیة مفتوحة ابداً و لیس فی هٰذا النّوع الّا المبشّرات او المنذرات من الامور المغیبة او اللطائف القرآنیة والعلوم اللّدنیّة۔ وامّا النّبوّة الّتی تامة کاملة جامعة لجمیع کمالات الوحی فقد آمنّا بانقطاعها من یوم نزل

فيه مَاكَانَ مُحَمَّدٌ اَبَا اَحَدٍ مِنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّنَ۔

(الاحزاب:۴۱)

(अल-अहज़ाब : 41)

अनुवाद :- तुझे ज्ञात हो कि अल्लाह तआला तेरा मार्ग दर्शन करता है कि नबी निश्चय ही मुहद्दिस भी होता है और मुहद्दिस नुबुव्वत के प्रकारों में किसी प्रकार को प्राप्त करने की दृष्टि से नबी होता है । चुनाँचै रसूलुल्लाह स.अ.व. ने फ़रमाया है कि नुबुव्वत में से कुछ शेष नहीं सिवाए मुबश्शिरात के अर्थात् नुबुव्वत के प्रकारों में केवल एक प्रकार शेष है और वह है रोयाए सादिका और सही मुकाशिफ़ात तथा वह वह्यी जो विशिष्ट वलियों पर उतारी जाती है और वह प्रकाश जो किसी पीड़ित कौम को प्रकाशमान करता है । हे दृष्टि रखने वाले आलोचक देख ! क्या इस हदीस का अर्थ यह है कि नुबुव्वत का द्वार पूर्ण रूप से बन्द हो गया अपितु यह हदीस इस तथ्य को सिद्ध करती है कि पूर्ण नुबुव्वत जो शरई विधान की वह्यी पर आधारित हो वह समाप्त हो चुकी है परन्तु वह नुबुव्वत जिसमें केवल मुबश्शिरात हों वह क़यामत (प्रलय) तक शेष रहेगी, उसकी कभी समाप्ति नहीं होगी । जबकि तुझे ज्ञात है और हदीसों की पुस्तकों में पढ़ा भी है कि रोयाए सालिहा नुबुव्वत का छियालीसवाँ भाग है अर्थात् पूर्ण नुबुव्वत का । अत: जब रोया की यह श्रेणी है तो अल्लाह तआला की ओर से मुहद्दिसों के हृदयों पर जो वह्यी की जाती है उस पर किस प्रकार आपत्ति की जा सकती है । अत: तुझे ज्ञात हो ''खुदा तेरी सहायता करे'' हमारी बात का सारांश यह है कि आंशिक नुबुव्वत का द्वार हमेशा खुला है । नुबुव्वत के इन प्रकारों में से केवल मुबश्शिरात (शुभ संदेश) या परोक्ष के मामलों से संबंधित भययुक्त संदेश, अथवा क़ुर्आन की सूक्ष्मताओं और ईश्वर प्रदत्त ज्ञानों से संबंधित संदेश । हाँ वह पूर्ण नुबुव्वत जो वह्यी के सम्पूर्ण कौशल पर आधारित हो, हम निश्चय ही ईमान रखते हैं कि वह उस दिन से समाप्त हो गई जब क़ुर्आन की यह आयत उतरी **''मा काना मुहम्मदुन अबा अहदिम्मिन रिजालेकुम वलाकिन रसूलल्लाहे व ख़ातमन्नबिय्यीना''** (अल अहज़ाब : 41 - अनुवादक)

यदि प्रश्न यह हो कि जिस विशेषता और आध्यात्मिक शक्ति में यह ख़ाकसार और मसीह इब्ने मरयम अनुरूपता रखते हैं वह क्या वस्तु है तो इसका उत्तर यह है कि वह एक सामूहिक विशेषता है जो हम दोनों की आध्यात्मिक शक्तियों में विशेष तौर पर रखी गई है, जिस के सिलसिले का एक किनारा नीचे को और एक किनारा ऊपर को जाता है । नीचे की ओर से अभिप्राय अल्लाह तआला की सृष्टि (मख़लूक़) के साथ उच्च स्तर की हमदर्दी और सहानुभूति है जो ख़ुदा की ओर बुलाने वाले तथा उसके तत्पर रहने वाले शिष्यों में एक अत्यन्त सुदृढ़ संबंध और रिश्ता प्रदान करके प्रकाशमान शक्ति जो ख़ुदा तआला की ओर बुलाने वाले के पवित्र हृदय में विद्यमान है उन समस्त हरी-भरी शाखाओं में फैलाती है । ऊपर की ओर से अभिप्राय वह उच्च स्तरीय प्रेम सुदृढ़ ईमान से मिला हुआ है जो पहले बन्दे के हृदय में ख़ुदा के इरादे से उत्पन्न होकर शक्तिमान रब्ब के प्रेम को अपनी ओर आकर्षित करता है । फिर उन दोनों प्रेमों के मिलने से जो वास्तव में नर और मादा का आदेश रखता है एक दृढ़ संबंध स्रष्टा और सृष्टि में एक ठोस मिलन उत्पन्न होकर ख़ुदाई प्रेम की चमकने वाली अग्नि से जो सृष्टि के ईंधन रूपी प्रेम को पकड़ लेता है एक तीसरी वस्तु उत्पन्न हो जाती है जिसका नाम **रूहुलकुदुस** (पवित्र आत्मा) है । अत: इस स्तर के मनुष्य का आध्यात्मिक जन्म उस समय से समझा जाता है जबकि ख़ुदा तआला अपनी विशेष इच्छा से उसमें इस प्रकार का प्रेम उत्पन्न कर देता है और उस पद और उस श्रेणी के प्रेम में बतौर रूपक यह कहना अनुचित नहीं है कि ख़ुदा तआला के प्रेम से भरी हुई आत्मा (रूह) उस मानवीय आत्मा को जो ख़ुदा तआला की इच्छा से अब प्रेम से भर गई है एक नया जन्म प्रदान करती है । यही कारण है कि इस प्रेम से भरी आत्मा को ख़ुदा तआला की आत्मा (रूह) से जो प्रेम को फूँकने वाली है रूपक के तौर पर इबनियत (बेटा) का रिश्ता होता है । चूँकि रूहुलकुदुस (पवित्र आत्मा) इन दोनों के मिलन से मनुष्य के हृदय में उत्पन्न होती है । इसलिए कह सकते हैं कि वह इन दोनों के लिए बतौर इब्न (बेटा) है और यही पवित्र तसलीस (तीन भागों में बांटना) है जो इस स्तर के प्रेम के लिए अनिवार्य है, जिसे अपवित्र स्वभावों ने

द्वैतवाद के तौर पर समझ लिया है और लेशमात्र संभावना को जो अस्तित्व की अविनाशी तथा यथार्थ को झूठा करने वाली है आदरणीय श्रेष्ठतम अनिवार्य अस्तित्व (ख़ुदा) के साथ समान ठहरा दिया है ।

परन्तु यदि यहाँ यह प्रश्न हो कि इस ख़ाकसार और मसीह के लिए यह स्तर मान्य है तो फिर जनाब हमारे सरदार तथा स्वामी सब का आक़ा रसूलों में सर्वश्रेष्ठ ख़ातमुन्नबिय्यीन मुहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व. के लिए कौन सा स्तर शेष है । अत: स्पष्ट हो कि वह एक उच्चतम पद और श्रेष्ठतम श्रेणी है जो उसी सम्पूर्ण विशेषताओं वाले अस्तित्व पर समाप्त हो गई है जिसके विवरण को पहुँचना भी किसी अन्य का कार्य नहीं और कहाँ यह कि वह किसी और को प्राप्त हो सके ।

شان احمد راکہ داند جُز خداوندِ کریم   آنچناں از خود جدا شد کز میاں اُفتاد میم
زان نمط شد محو دلبر کز کمال اتحاد   پیکر اوشد سراسر صورت رب رحیم
بوئے محبوبِ حقیقی میدمد زاں روئے پاک   ذات حقانی صفاتش مظہرِ ذاتِ قدیم
گرچہ منسوبم کند کس سوئے الحاد وضلال   چوں دلِ احمد نمے بینم دگر عرشے عظیم
منت ایزد راکہ من بر رغم اہل روزگار   صد بلا رامیخرم از ذوق آں عین النعیم
از عنایاتِ خدا واز فضل آں دادار پاک   دشمن فرعونیانم بہر عشقِ آں کلیم
آں مقام ورتبتِ خاصش کہ برمن شد عیاں   گفتمے گر دیدمے طبعی دریں راہے سلیم
دررہِ عشقِ محمدؐ ایں سروجانم رود   ایں تمنا ایں دُعا ایں دردلم عزمِ صمیم

(अनुवाद :- (1) हज़रत अहमद (स.अ.व.) के वैभव और शान को दयालु ख़ुदावन्द के अलावा कौन जानता है ? वह अपने अहंकार से इस प्रकार से पृथक हो गया कि जिस प्रकार अहमद के मध्य से 'म' पृथक हो गया । (2) वह एकत्व की पूर्णता के कारण अपने प्रियतम में इस प्रकार विलीन हो गया कि उसकी शक्ल सरासर रब्बे-रहीम की शक्ल हो गई । (3) उसके मुखमंडल से वास्तविक प्रियतम

की सुगन्ध आ रही है, उसकी ईश्वर प्रदत्त हस्ती अनादि ईश्वर की हस्ती की पात्र है । (4) यद्यपि कोई मुझे कुफ्र और पथ-भ्रष्टता से सम्बद्ध करे, परन्तु मैं अहमद के हृदय जैसा कोई अन्य महान अर्श (आध्यात्मिक सिंहासन) नहीं पाता । (5) अल्लाह तआला का उपकार है कि मैं सांसारिक लोगों के विरुद्ध उस नैमत के उदगम की इच्छा के कारण सैकड़ों विपत्तियाँ ख़रीद रहा हूँ । (6) मैं अल्लाह तआला की महरबानियों और उसकी कृपा से स्वयं भी उस वार्तालाप करने वाले ख़ुदा के प्रेम-हेतु जो फ़िरऔनियों (नास्तिकों) का शत्रु हूँ । (7) आँहज़रत स.अ.व. का वह विशेष पद और श्रेणी जो कि मुझ पर प्रकट हुई, मैं उसका अवश्य वर्णन करता, यदि मैं इस मार्ग में किसी सद्बुद्धि वाला पाता । (8) हज़रत मुहम्मद स.अ.व. के प्रेम में मेरा सर और प्राण न्यौछावर हो, मेरी यही कामना, यही दुआ तथा यही मेरी हार्दिक इच्छा है । (अनुवादक)

अब आँहज़रत स.अ.व. की उच्चतम श्रेणी को पहचानने के लिए इतना लिखना आवश्यक है कि सानिध्य और प्रेम को उनकी आध्यात्मिक श्रेणियों की दृष्टि से तीन प्रकारों में बांटा जाता है । सब से निम्न श्रेणी जो वास्तव में वह भी बड़ी है यह है कि ख़ुदा के प्रेम की अग्नि मनुष्य के हृदय की तख़्ती को गर्म तो करे और संभव है कि ऐसा गर्म करे कि उस तापप्राप्त से अग्नि के कुछ कार्य हो सकें, परन्तु यह कमी रह जाए कि उस प्रभावित में अग्नि की चमक उत्पन्न न हो । इस श्रेणी के प्रेम पर जब ख़ुदा तआला के प्रेम की ज्वाला पड़े तो उस ज्वाला से आत्मा में जिस क़दर गर्मी उत्पन्न होती है उसको शान्ति और संतुष्टि और कभी फ़रिश्ता तथा मलक के शब्द से भी याद करते हैं ।

प्रेम की दूसरी श्रेणी वह है जो हम ऊपर वर्णन कर चुके हैं जिसमें दोनों प्रेमों के मिलन से ख़ुदा के प्रेम की अग्नि मनुष्य के हृदय की तख़्ती को इस क़दर गर्म करती है कि उसमें अग्नि की तरह एक चमक उत्पन्न हो जाती है, परन्तु इस चमक में किसी प्रकार की उत्तेजना या भड़कना नहीं होता, केवल एक चमक होती है जिसे रुहुलक़ुदुस (पवित्रात्मा) के नाम से नामित किया जाता है ।

प्रेम की तीसरी श्रेणी वह है जिसमें ख़ुदा तआला के प्रेम की एक

अत्यन्त भड़कती हुई ज्वाला मानवीय प्रेम की तैयार बत्ती पर पड़ कर उसको भड़का देती है तथा उसके समस्त भाग और समस्त शरीर पर प्रभुत्व जमाकर उसे अपने अस्तित्व का पूर्णतम पात्र बना देती है । उस स्थिति में ख़ुदा तआला के प्रेम की अग्नि मनुष्य के हृदय की तख़्ती को न केवल एक चमक प्रदान करती है अपितु उस चमक के साथ तुरन्त सम्पूर्ण अस्तित्व भड़क उठता है तथा उसकी लौ और ज्वाला आस-पास को प्रकाशमय दिवस की भाँति प्रकाशित कर देते हैं तथा किसी प्रकार का अन्धकार शेष नहीं रहता, पूर्णरूपेण और सम्पूर्ण विशेषताओं के साथ वह समस्त अस्तित्व अग्नि ही अग्नि हो जाता है । यह अवस्था जो एक भड़कती हुई अग्नि के रूप में दोनों प्रेमों के मिलन से उत्पन्न हो जाती है उसको 'रूहे अमीन' (अमानतदार आत्मा) के नाम से पुकारते हैं, क्योंकि यह प्रत्येक अंधकार से शान्ति प्रदान करती है तथा प्रत्येक वैमनस्य से रिक्त है । उसका नाम 'शदीदुलक़ुवा' (महा शक्तिशाली) भी है, क्योंकि यह उच्च स्तर की शक्ति वह्यी है जिससे अधिक शक्तिशाली वह्यी की कल्पना तक नहीं । इसका नाम 'ज़ुल उफ़क़िल आला' (सर्वोच्च बुलन्दियों वाला) भी है, क्योंकि यह ख़ुदा तआला की असीम श्रेणी की झलक है । इसे 'रआ मा रआ' (मैराज) के नाम से भी पुकारा जाता है । क्योंकि इस अवस्था का अनुमान समस्त सृष्टि के अनुमान, विचार और भ्रम से बाहर है । यह अवस्था संसार में केवल एक ही मनुष्य को प्राप्त हुई है जो 'इन्साने कामिल' (स.अ.व.) है । जिस पर इन्सानियत का समस्त सिलसिला समाप्त हो गया है और मानवीय योग्यताओं का क्षेत्र अपनी पूर्णता को पहुँचा है और वह वास्तव में ख़ुदाई पैदायश की सरल रेखा के ऊपरी ओर का अन्तिम बिन्दु है जो ऊँचाई के समस्त पदों का अन्त है । ख़ुदा की नीति के हाथ ने तुच्छ से तुच्छ तथा निम्न से निम्न सृष्टि से उत्पन्न करने का सिलसिला आरंभ करके उस उच्च श्रेणी के बिन्दु तक पहुँचा दिया है जिसका नाम दूसरे शब्दों में 'मुहम्मद' है स.अ.व. । जिस का अर्थ है कि नितान्त प्रशंसा किया गया अर्थात् समस्त पूर्णताओं का पात्र। अत: जैसा कि स्वभाव की दृष्टि से उस नबी का उच्च और श्रेष्ठ पद था ऐसा ही बाहरी तौर पर भी वह्यी का उच्च और श्रेष्ठ पद उसे प्रदान हुआ तथा प्रेम का उच्च और श्रेष्ठ पद प्राप्त हुआ । यह वह श्रेष्ठ

पद है कि मैं और मसीह दोनों उस पद तक नहीं पहुँच सकते । इस का नाम 'जमअ का पद' तथा 'पूर्ण एकत्व का पद' है । पहले नबियों ने जो आँहज़रत स.अ.व. के आगमन की सूचना दी है इसी पते और निशान पर दी है और इसी पद की ओर संकेत किया है । जैसा कि मसीह और इस ख़ाकसार का पद ऐसा है कि उसको रूपक के तौर पर इब्नियत (बेटा) के शब्द से पुकार सकते हैं । इसी प्रकार यह वह श्रेष्ठ पद है कि पूर्वकालीन नबियों ने रूपक के तौर पर इस पद वाले के प्रकटन को ख़ुदा तआला का प्रकटन ठहरा दिया तथा उस का आना ख़ुदा तआला का आना ठहराया है । जैसा कि हज़रत मसीह ने भी एक उदाहरण को प्रस्तुत करके कहा है कि - 'अंगूरिस्तान का फल लेने के लिए प्रथम बाग के स्वामी ने (जो ख़ुदा तआला है) अपने नौकरों को भेजा, अर्थात् प्राथमिक❶ के सानिध्य वालों को जिस से अभिप्राय वे समस्त सदात्मा लोग हैं जो हज़रत मसीह के युग में और उसी शताब्दी में परन्तु उन से कुछ पूर्व आए। फिर जब मालियों ने बाग़ का फल देने से इन्कार किया तो बाग़ के स्वामी ने चेतावनी के तौर पर उनकी ओर अपने बेटे को भेजा ताकि उसे बेटा समझ कर बाग़ का फल उसके सुपुर्द करें । उस स्थान पर बेटे से अभिप्राय मसीह है जिनको सानिध्य और प्रेम की दूसरी श्रेणी प्राप्त है, परन्तु मालियों ने उस बेटे को भी बाग़ का फल न दिया, अपितु अपने विचार में उसकी हत्या कर दी । तत्पश्चात हज़रत मसीह कहते हैं अब बाग़ का स्वामी स्वयं आएगा अर्थात् ख़ुदा तआला स्वयं प्रकटन करेगा ताकि मालियों की हत्या करके बाग़ को ऐसे लोगों को दे दे कि अपने समय पर फल दे दिया करें । यहाँ ख़ुदा तआला के आने से अभिप्राय हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व. का आना है जो सानिध्य और प्रेम की तीसरी श्रेणी अपने लिए प्राप्त की है❷ और यह आध्यात्मिक पद हैं जो रूपक के तौर पर यथायोग्य शब्दों में वर्णन किए गए हैं, यह नहीं कि इस स्थान पर यथार्थ इब्नियत (बेटा होना) अभिप्राय नहीं है और न

हाशिया :- ❶ 'प्राथमिक श्रेणी' पढ़ा जाए । शम्स

❷ हमारे सरदार तथा स्वामी आदरणीय उज्जवल ख़ातमुलअंबिया के सन्दर्भ में केवल हज़रत मसीह ने ही वर्णन नहीं किया कि आप (स.अ.व.) के पक्ष में अपनी-अपनी भविष्यवाणियों में वर्णन किया है तथा रूपक के तौर पर

ही यथार्थ शाने ख़ुदावन्दी ।

इस स्थान पर इस बात का उल्लेख भी अनुचित न होगा कि जो कुछ हमने रूहुल-कुदुस और रूहुलअमीन इत्यादि की व्याख्या की है यह

(शेष हाशिया) :– आंजनाब (स.अ.व.) के प्रकटन को ख़ुदा तआला का प्रकटन ठहराया है । अपितु ख़ुदाई के पूर्णतम पात्र होने के कारण आप (स.अ.व.) को ख़ुदा करके पुकारा है । चुनाँचै हज़रत दाऊद के 'ज़बूर' में लिखा है ''तू सुन्दरता में बनी आदम (इन्सान) से कहीं अधिक है, तेरे होठों में नैमत बनाई गई । इसलिए ख़ुदा ने तुझे अबद (हमेशा) तक मुबारक किया (अर्थात् तू ख़ातमुलअंबिया ठहरा) हे पहलवान ! तू पद और प्रताप (रोब-दबदबा) से अपनी तलवार को म्यान में डालकर अपनी रान पर लटका । अमानत, सहिष्णुता और अदालत पर अपनी श्रेष्ठता और प्रताप से सवार होकर तेरा दाहिना हाथ तुझे भयानक काम दिखाएगा, बादशाह के शत्रुओं के हृदयों में तेरे तीर तेज़ी करते हैं, लोग तेरे समक्ष गड़ (स्थिर हो जाते हैं) जाते हैं । हे ख़ुदा ! तेरा तख़्त अनन्त काल तक आबाद है, तेरे शासन का डंडा सच्चाई का डंडा है, तूने सत्य से मित्रता और बुराई से शत्रुता की है । इसीलिए ख़ुदा ने जो तेरा ख़ुदा है ख़ुशी के इत्र से तेरे साथियों से अधिक तुझे सुगंधित किया है ।'' (देखो 'ज़बूर' : 45)

अब जानना चाहिए कि 'ज़बूर' का यह वाक्य कि ''हे ख़ुदा ! तेरा तख़्त हमेशा के लिए आबाद है, तेरे शासन का डंडा सत्य का डंडा है ।'' यह मात्र बतौर रूपक है, जिसका उद्देश्य यह है कि आध्यात्मिक तौर पर जो मुहम्मद की शान है उसको प्रकट कर दिया जाए । फिर यसइयाह नबी की किताब में भी ऐसा ही लिखा है । चुनाँचै उसकी इबारत यह है :-

''देखो मेरा बन्दा जिसे मैं संभालूंगा, मेरा आदिष्ट, जिस से मेरा हृदय प्रसन्न है, मैंने अपनी रूह उस पर रखी, वह क़ौमों पर सत्य प्रकट करेगा, वह न चिल्लाएगा और न अपनी आवाज़ बुलन्द करेगा, अपनी आवाज़ बाज़ारों में न सुनाएगा, वह मसले हुए सेंठे को न तोड़ेगा और सन को जिस से धुआँ उठता है न बुझाएगा जब तक कि सत्य को शान्ति के साथ प्रकट न करे, वह न घटेगा न थकेगा जब तक सत्य को पृथ्वी पर स्थापित न करे और द्वीप उसकी शरीअत के प्रतीक्षक हों... ख़ुदावन्द ख़ुदा एक बहादुर की भाँति निकलेगा, वह योद्धा की तरह अपने आत्म-सम्मान को उकसाएगा... अन्त तक ।'' अब जानना चाहिए कि यह वाक्य कि ''ख़ुदावन्द ख़ुदा एक बहादुर की भाँति निकलेगा'' यह भी बतौर रूपक के आँहज़रत स.अ.व. के प्रतापी प्रकटन को प्रकट कर रहा है (देखो यसइयाह नबी की किताब बाब : 42)

वास्तव में उन आस्थाओं से जो मुसलमान फ़रिश्तों के संबंध में रखते हैं विपरीत नहीं है, क्योंकि मुसलमान अन्वेषक इस बात को कदापि स्वीकार नहीं करते कि फ़रिश्ते अपने व्यक्तिगत अस्तित्व के साथ मनुष्यों की भाँति पैरों से चलकर पृथ्वी पर उतरते हैं । यह धारणा स्पष्ट तौर पर मिथ्या भी है, क्योंकि यदि यह अनिवार्य होता कि फ़रिश्ते अपनी अपनी सेवाओं और कार्यों को पूर्ण करने के लिए अपने वास्तविक अस्तित्व के साथ पृथ्वी पर उतरा करते तो फिर उन से किसी कार्य का सम्पन्न होना नितान्त असंभव था । उदाहरणतया मृत्यु का फ़रिश्ता जो एक सेकन्ड में सहस्त्रों ऐसे लोगों के प्राण निकालता है जो भिन्न-भिन्न देशों और नगरों में एक दूसरे से सहस्त्रों कोसों की दूरी पर निवास करते हैं । यदि प्रत्येक के लिए साधनों का मुहताज होकर प्रथम पैरों से चलकर उसके देश, नगर और घर में जाए फिर इतने परिश्रम के पश्चात उसे प्राण निकालने का अवसर मिले तो एक सेकण्ड क्या इतनी बड़ी कार्यवाही के लिए तो कई माह की छूट भी पर्याप्त नहीं हो सकती । क्या यह संभव है कि एक व्यक्ति मनुष्यों की भाँति चल कर एक पल या उस से कम समय में समस्त संसार घूम कर आ जाए । कदापि नहीं अपितु फ़रिश्ते अपने मूल स्थान से जो ख़ुदा तआला की ओर से उनके लिए नियुक्त हैं लेशमात्र भी आगे पीछे नहीं होते । जैसा कि ख़ुदा तआला उनकी ओर से कुर्आन शरीफ़ में फ़रमाता है - وَمَا مِنَّآ اِلَّا لَهٗ مَقَامٌ مَّعْلُوْمٌ ۙ وَّاِنَّا لَنَحْنُ الصَّآفُّوْنَ **(वमा मिन्ना इल्ला लहू मक़ामुन मालूमुन व इन्ना लनहनुस्साफ़्फ़ून)**[1] अर्थात् (नारकीय लोग कहेंगे) और हम में से प्रत्येक के लिए एक मालूम स्थान नियुक्त है और हम सब ख़ुदा के सामने पंक्तिबद्ध खड़े हैं । अनुवादक) अतः मूल बात

(शेष हाशिया) :- ऐसा ही अन्य कई नबियों ने भी इस रूपक को अपनी भविष्यवाणियों में आँहज़रत स.अ.व. की शान में प्रयोग किया है, परन्तु चूँकि इन समस्त स्थानों के लिखने से विस्तृत हो जाता है । इसलिए इतने को ही पर्याप्त समझता हूँ । मैंने इस स्थान पर जो तीन पद सानिध्य और प्रेम के लिख कर तीसरा पद जो श्रेष्ठतम पद है आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के लिए सिद्ध किया है यह मेरी ओर से एक इज्तिहादी (चिन्तन द्वारा किसी बात का समाधान निकालना) विचार नही अपितु इल्हामी तौर पर ख़ुदा तआला ने मुझ पर प्रकट कर दिया है । (इसी से)

[1] अस्साफ़्फ़ात : 165, 166 ।

यह है कि जिस प्रकार सूर्य अपने स्थान पर है तथा उसका ताप और प्रकाश पृथ्वी पर फैल कर अपनी विशेषताओं के अनुसार पृथ्वी की प्रत्येक वस्तु को लाभ पहुँचाता है इसी प्रकार आकाशीय आध्यात्मिकता चाहे उन को यूनानियों के मतानुसार आकाशीय पिंड कहें या दसातीर (इस्लाम से पूर्व के कुछ धर्म ग्रन्थ) और वेद की परिभाषा के अनुसार नक्षत्रों की आत्मा के नाम से नामित करें अथवा अत्यन्त सीधे अद्वैतवादी ढंग से उनको मलाइकुल्लाह (ख़ुदा के फ़रिश्ते) का सम्बोधन दें[1] । वास्तव में यह विचित्र सृष्टियाँ अपने अपने स्थान में स्थापित और स्थिर हैं तथा ख़ुदा तआला की पूर्ण नीति के अनुसार पृथ्वी की प्रत्येक संलग्न वस्तु को उसके उद्देश्य की पूर्णता तक पहुँचाने के लिए ये आध्यात्मिकता सेवारत हैं । प्रत्यक्ष सेवाएँ भी करती हैं और आन्तरिक भी । जिस प्रकार हमारे शरीर और हमारी समस्त प्रत्यक्ष शक्यिों पर सूर्य, चन्द्रमा तथा अन्य पिण्डों का प्रभाव है, इसी प्रकार हमारे हृदय, मस्तिष्क और हमारी समस्त आध्यात्मिक शक्तियों पर ये समस्त मलाइक (फ़रिश्ते) हमारी विभिन्न योग्यताओं के अनुसार अपना-अपना प्रभाव डाल रहे हैं । जो वस्तु अपने अन्दर किसी उत्तम जौहर बनने की योग्यता रखती है वह यद्यपि धूल का एक कण है या पानी की वह बूंद जो सीप में प्रवेश करती है या पानी की वह बूंद जो गर्भाशय में पड़ती है वह उन ख़ुदा के फ़रिश्तों के आध्यात्मिक प्रशिक्षण से लाल (पद्म राग), अलमास (हीरा), याक़ूत (पुलक) और नीलम (नीलमणि)[2] इत्यादि या अत्यन्त चमकीला भारी मोती या उच्च श्रेणी के हृदय और मस्तिष्क का मनुष्य बन जाता है । 'दसातीर' (पारसियों की पवित्र किताबें) जिसे मजूसी (अग्निपूजक) इल्हामी मानते हैं, जिसने अपने प्रकटन की अवधि का वह लम्बा इतिहास बताया है जिसका करोड़वां भाग भी वेद के प्रकटन की अवधि के सन्दर्भ में वर्णन नहीं किया गया । अर्थात वेद के सन्दर्भ में तो केवल एक अरब

हाशिया :- [1] मलाइक (फ़रिश्ते) इस दृष्टि से मलाइक कहलाते हैं कि वे मलाक आकाशीय पिण्डों और मलक पृथ्वी की स्थूल वस्तुओं के हैं । अर्थात् उनके स्थायित्व और अस्तित्व के लिए आत्मा (रूह) की भाँति हैं तथा इस दृष्टि से भी मलाइक कहलाते हैं कि वे रसूलों का काम देते हैं । (इसी से)

[2] ये सब बहुमूल्य रत्नों के नाम हैं (अनुवादक)

छियानवे करोड़ वर्ष प्रकटन की अवधि मात्र दूसरों के अनुमान और कल्पना से ठहराई गई है, परन्तु दसातीर अपने प्रकटन की अवधि तीन शंख से अधिक स्वयं वर्णन करता है अपितु यह तो हमने डरते-डरते लिखा है, वहाँ तो शंखों की सीमा से आगे मध्य में तीन शून्य और भी हैं । यह किताब उन आध्यात्मिकताओं को जो नक्षत्रों और आकाशों से संबंध रखती हैं, न केवल फ़रिश्ते ठहराती हैं अपितु उनकी उपासना के लिए भी पाबन्द करती हैं । इसी प्रकार वेद भी उन आध्यात्मिकताओं को केवल माध्यम तथा मध्य के सेवक नहीं मानता, अपितु भिन्न-भिन्न स्थानों पर उनकी स्तुति और महिमा का गुणगान करता है तथा उनसे मनोकामनाएँ माँगने की शिक्षा देता है । संभव है कि इन किताबों में उलट-फेर और कुछ जोड़ने के तौर पर ये नास्तिकतापूर्ण शिक्षाएँ बढ़ाई गई हों जैसा कि वेद में । ऐसी और भी बहुत सी अनुचित शिक्षाएँ पाई जाती हैं । उदाहरणतया यह शिक्षा कि इस संसार का कोई स्रष्टा नहीं है तथा प्रत्येक वस्तु अपने मूल तत्व और मूल जीवन की दृष्टि से अनादि, स्वयंभू और अपने अस्तित्व की स्वयं ही ख़ुदा है अथवा यह शिक्षा कि किसी अस्तित्व को आवागमन के अशुभ चक्र से कभी और किसी युग में मुक्ति प्राप्त हो ही नहीं सकती या यह शिक्षा कि एक पति वाली स्त्री नर सन्तान न होने की स्थिति में किसी परपुरुष से संभोग कर सकती है ताकि उस से सन्तान प्राप्ति करे, या यह शिक्षा कि बड़े-बड़े पवित्र लोग भी यद्यपि वेद के ही ऋषि क्यों न हों जिन पर चारों वेद उतरे हों हमेशा की मुक्ति कभी नहीं पा सकते और न अनिवार्यरूप से हमेशा प्रतिष्ठित तथा सम्मान के साथ स्मरणयोग्य ठहर सकते हैं, अपितु संभव है कि आवागमन के चक्र में आकर अन्य प्राणियों की भाँति कुछ के कुछ बन जाएँ अपितु शायद बन गए हों । उनके विचार में चाहे कोई मनुष्य अवतारों से भी अधिक पद रखता हो या वेद के ऋषियों से भी बढ़कर हो उसके लिए संभव अपितु प्रकृति के नियम की दृष्टि से आवश्यक है कि किसी समय वह कीडा-मकोड़ा या अत्यन्त घृणित और नफ़रत-योग्य जानवर बन कर किसी अधम प्रकार की मख़लूक (सृष्टि) में जन्म ले । ये सब मिथ्या शिक्षाएँ हैं जो मनुष्यों के क्षुद्र और कमीनगी भरे विचारों ने आविष्कृत की हैं । जिन लोगों ने ये निर्लज्जता के समस्त कार्य और अपने मनुष्यों की असम्माननीय हस्तांतरण

अपितु अपने बुज़ुर्गों और पेशवाओं के लिए उचित रखे हैं । उन्होंने यह भी वैध कर लिया कि नक्षत्रों की आत्माओं से मनोकामनाएँ मांगी जाएँ । उनकी ऐसी उपासना की जाए जैसी ख़ुदा तआला की करना चाहिए, परन्तु कुर्आन शरीफ जो हर प्रकार से अद्वैतवाद और सभ्यता का मार्ग खोलता है, उसने कदापि वैध नहीं रखा कि उसके साथ किसी सृष्टि की पूजा हो या उसकी परवरदिगारी की कुदरत केवल अपूर्ण और व्यर्थ तौर पर स्वीकार करें तथा उसे प्रत्येक वस्तु का प्रारंभ और उदगम न ठहराएँ या कोई और निर्लज्जता का कार्य अपने रहन-सहन की शैली में सम्मिलित कर लें ।

अब मैं पुन: मलाइक (फ़रिश्ते) की चर्चा की ओर लौटते हुए कहता हूँ कि कुर्आन शरीफ़ ने जिस शैली में फ़रिश्तों का हाल वर्णन किया है वह नितान्त सीधा और अनुमान के निकट का मार्ग है तथा मनुष्य को उसे स्वीकार करने के अतिरिक्त कोई चारा नहीं । कुर्आन शरीफ़ पर गहरी दृष्टि से विचार करने से ज्ञात होता है मनुष्य अपितु समस्त विश्व के बाह्य और आन्तरिक प्रशिक्षण के लिए कुछ माध्यमों का होना अनिवार्य है । कुर्आन के कुछ-कुछ संकेतों से नितान्त स्पष्टता के साथ ज्ञात होता है कि कुछ वे उज्जवल अस्तित्व जो फ़रिश्तों से नामित हैं, आकाशीय वर्गों से उनके अलग-अलग संबंध हैं । कुछ अपने विशेष प्रभावों से वायु के चलाने वाले और कुछ वर्षा करने वाले तथा कुछ-कुछ अन्य प्रभावों को पृथ्वी पर उतारने वाले हैं । अत: इसमें कुछ सन्देह नहीं कि वे पवित्र अस्तित्व अपनी प्रकाशमान अनुकूलता के कारण उन प्रकाशमान और प्रकाशित नक्षत्रों से संबंध रखते होंगे कि जो आकाशों में पाए जाते हैं, परन्तु इस संबंध को ऐसा नहीं समझना चाहिए कि जैसे पृथ्वी का प्रत्येक प्राणी अपने अन्दर प्राण रखता है अपितु उन पवित्र अस्तित्वों को अपनी प्रकाशमय स्थिति की अनुकूलता के कारण और प्रकाश के कारण जो आध्यात्मिक तौर पर उन्हें प्राप्त है प्रकाशित नक्षत्रों के साथ एक अज्ञात मर्म जैसा संबंध है और ऐसा ठोस संबंध है कि यदि उन पवित्र अस्तित्वों का उन नक्षत्रों से पृथक होना मान लिया जाए तो फिर उनकी समस्त शक्तियों में अन्तर पड़ जाएगा । उन्हीं अस्तित्वों के गुप्त हाथ के बल से समस्त नक्षत्र अपने-अपने कार्य में व्यस्त हैं और जैसे ख़ुदा तआला समस्त संसार के लिए बतौर प्राण के हैं, ऐसा ही (परन्तु इस स्थान पर पूर्ण

एकरूपता अभिप्राय नहीं) वे प्रकाशमय अस्तित्व नक्षत्रों और पिंडों के लिए प्राण का ही आदेश रखते हैं तथा उनके पृथक हो जाने से उनके अस्तित्व की स्थिति में विकार का प्रवेश कर जाना आवश्यक बात है । आज तक किसी ने इस मामले में भिन्नता नहीं दिखाई कि आकाशों में जितने पिंड और नक्षत्र पाए जाते हैं वे विश्व की पूर्णता तथा प्रशिक्षण के लिए हमेशा कार्यरत हैं । अत: यह नितान्त परखी हुई तथा प्रमाण के आकाश पर चढ़ी हुई सच्चाई है कि समस्त वनस्पतियाँ, स्थूल पदार्थ और प्राणियों पर आकाशीय नक्षत्रों का दिन-रात प्रभाव पड़ रहा है और मूर्ख से मूर्ख एक किसान भी इतना तो अवश्य विश्वास रखता होगा कि चन्द्रमा का प्रकाश फलों को मोटा करने के लिए और सूर्य की धूप उनको पकाने और मधुर करने के लिए और कुछ हवाएँ अधिक फल आने के लिए नि:सन्देह प्रभावकारी हैं । अब जबकि विश्व का प्रत्यक्ष सिलसिला इन वस्तुओं के विभिन्न प्रभावों से प्रशिक्षण पा रहा है तो इसमें क्या सन्देह हो सकता है कि आन्तरिक सिलसिले पर भी ख़ुदा की आज्ञानुसार वे प्रकाशमान अस्तित्व प्रभाव डाल रहे हैं जिन का प्रकाशमान पिंडों से ऐसा ठोस संबंध है कि जैसे प्राण को शरीर से होता है ।

अब तत्पश्चात यह भी जानना चाहिए कि यद्यपि प्रत्यक्षतया यह बात सभ्यता से नितान्त दूर ज्ञात होती है कि ख़ुदा तआला और उस के पवित्र नबियों में वह्यी के प्रकाशों से लाभ पहुँचाने के लिए कोई अन्य माध्यम प्रस्तावित किया जाए, परन्तु तनिक विचार करने से भली-भाँति समझ आ जाएगा कि इस में कोई असभ्यता की बात नहीं अपितु सरासर ख़ुदा तआला के इस सामान्य प्रकृति के नियम के अनुकूल है जो संसार की प्रत्येक वस्तु के संबंध में स्पष्ट तौर पर अवलोकन और अनुभूति हो रही है, क्योंकि हम देखते हैं कि अंबिया अलैहिमुस्सलाम भी अपने प्रत्यक्ष शरीर और शक्तियों की दृष्टि से उन्हीं माध्यमों के मुहताज हैं । नबी की आँख भी कैसी ही प्रकाशित और बरकतवाली आँख है परन्तु फिर भी जन साधारण की आँखों की भाँति सूर्य या उसके किसी दूसरे माध्यम के बिना कुछ देख नहीं सकते तथा वायु के माध्यम के बिना कुछ सुन नहीं सकते । अत: यह बात भी आवश्यक तौर पर स्वीकार करना पड़ती है कि नबी की आध्यात्मिकता पर भी इन गतिमान नक्षत्रों के

प्रकाशमान अस्तित्वों का अवश्य प्रभाव पड़ता होगा अपितु सर्वाधिक प्रभाव पड़ता होगा, क्योंकि योग्यता जितनी स्वच्छ और पूर्ण होती है उतना ही प्रभाव भी स्वच्छ और पूर्णरूप से पड़ता है । क़ुर्आन शरीफ़ से सिद्ध है कि ये गतिमान नक्षत्र और सितारे अपने-अपने शरीरों के संबंध में एक-एक रूह (आत्मा) रखते हैं जिन्हें नक्षत्रों के अस्तित्व से भी नामित कर सकते है, जैसे सितारों और नक्षत्रों में उनके शरीरों की दृष्टि से भिन्न-भिन्न प्रकार की विशेषताएँ पाई जाती हैं जो पृथ्वी की प्रत्येक वस्तु पर उनकी योग्यता और पात्रता के अनुसार प्रभाव डाल रही हैं, इसी प्रकार उनके प्रकाशमान अस्तित्वों में भाँति-भाँति की विशेषताएँ हैं जो ख़ुदा की आज्ञानुसार पृथ्वी की सृष्टि के अन्त:करण पर अपना प्रभाव डालते हैं और ये ही प्रकाशमान अस्तित्व कामिल बन्दों पर शारीरिक तौर पर आकृति धारण करके प्रकट हो जाते हैं तथा मानवीय रूप धारण करके दिखाई देते हैं । स्मरण रखना चाहिए कि यह भाषण सम्बोधन के प्रकारों में से नहीं अपितु यह वह सत्य है जो सत्य और नीति के अभिलाषी को अवश्य स्वीकार करना पड़ेगा, क्योंकि जब हमें स्वीकार करना पड़ता है कि पृथ्वी की सृष्टि (काइनात) का प्रशिक्षण आवश्यक तौर पर आकाशीय पिण्डों की ओर से हो रहा है और जहाँ तक हम पृथ्वी के स्थूल पदार्थों पर खोज की दृष्टि से दृष्टि डालते हैं तो उस प्रशिक्षण के लक्षण प्रत्येक शरीर पर चाहे वह वनस्ततियों में से हैं, चाहे स्थूल पदार्थों में से हैं, चाहे प्राणी वर्ग से हैं हमें व्यापक तौर पर दिखाई देते हैं । अत: इस स्पष्ट अनुभव द्वारा हम इस बात को स्वीकार करने के लिए भी विवश हैं कि आध्यात्मिक पूर्णताएँ तथा हृदय और मानसिक प्रकाश का क्रम भी जहाँ तक उन्नति करता है निसन्देह उन प्रकाशमान अस्तित्त्वों का इन में भी हस्तक्षेप है । इसी हस्तक्षेप की दृष्टि से प्रकाशमान शरीअत ने रूपक के तौर पर अल्लाहतआला तथा उसके रसूलों में फ़रिश्तों का माध्यम होना एक आवश्यक मामला प्रकट किया है जिन पर ईमान लाना धार्मिक आवश्यकताओं में गिना गया है । जिन लोगों ने अपनी घृणित मूर्खता से इस ख़ुदाई दर्शन को नहीं समझा, जैसे आर्य धर्म वाले या ब्रह्म धर्म वाले । उन्होंने शीघ्रता से अपनी अकारण कंजूसी और द्वेष के कारण जो उनके हृदयों में भरा हुआ है क़ुर्आनी शिक्षा पर यह आरोप लगा दिया कि वह

अल्लाह और उसके रसूलों में फ़रिश्तों का माध्यम अनिवार्य ठहराता है तथा इस बात को नहीं समझा और न विचार किया कि ख़ुदा तआला का प्रशिक्षण का सामान्य नियम जो पृथ्वी पर पाया जाता है उसी नियम पर आधारित है । हिन्दुओं के ऋषि जिन पर हिन्दुओं के मतानुसार चारों वेद उतरे । क्या वे अपनी शारीरिक शक्तियों के उचित प्रकार से स्थापित रहने में आकाशीय पिंडों के प्रभावों के मुहताज नहीं थे । क्या वे सूर्य के प्रकाश के बिना केवल आँखों के प्रकाश से देखने का कार्य ले सकते थे अथवा वायु के माध्यम के बिना किसी आवाज़ को सुन सकते थे। तो इस का उत्तर बिना सोचे समझे स्पष्ट तौर पर यही होगा कि कदापि नहीं अपितु वे भी आकाशीय पिण्डों के प्रशिक्षण और पूर्णता के अत्यन्त मुहताज थे । हिन्दुओं के वेदों ने उन फ़रिश्तों के सन्दर्भ में कहाँ इन्कार किया है अपितु उन्होंने तो इन माध्यमों के स्वीकार करने तथा महत्वपूर्ण जानने में बहुत ही अतिश्योक्ति की है, यहाँ तक कि ख़ुदा तआला की श्रेणी से उनकी श्रेणी को समान ठहरा दिया है । एक ऋग्वेद पर ही दृष्टि डाल कर देखो कि उसमें आकाशीय पिण्डों और तत्त्वों की किस कदर उपासना विद्यमान है तथा उनकी कैसी स्तुति, महिमा, प्रशंसा और तारीफ़ में पृष्ठ के पृष्ठ काले कर दिए हैं तथा किस नम्रता और गिड़गिड़ाहट से उन से प्रार्थनाएँ की गई हैं जो स्वीकार भी नहीं हुई, परन्तु क़ुर्आनी शरीअत ने तो ऐसा नहीं किया अपितु उन प्रकाशमान अस्तित्वों, जो आकाशीय पिण्डों से या तत्वों अथवा वाष्पों से ऐसा संबंध रखते हैं जैसे प्राण का शरीर से होता है केवल फ़रिश्तों या जिन्नों के नाम से नामित किया है तथा उन प्रकाशमान फ़रिश्तों को जो प्रकाशमान सितारों और नक्षत्रों पर अपना स्थान रखते हैं अपने पवित्र अस्तित्व और अपने रसूलों में इस प्रकार का माध्यम नहीं ठहराया जिसकी दृष्टि से उन फ़रिश्तों को शक्तिशाली अथवा अधिकार रखने वाला मान लिया जाए अपितु उनको अपने सन्दर्भ में ऐसा प्रकट किया है कि जैसे एक निष्प्राण वस्तु एक जीवित के हाथ में होती है, जिस से वह जीवित जिस प्रकार से काम लेना चाहता है लेता है । इसी आधार पर क़ुर्आन शरीफ़ में कुछ स्थानों पर शरीरों के प्रत्येक कण पर भी फ़रिश्तों का नाम चरितार्थ कर दिया गया है क्योंकि वे समस्त कण अपने दयालु ख़ुदा की आवाज़ सुनते हैं और वही करते हैं जो उनको

आदेश दिया गया हो । उदाहरणतया मानव शरीर में जो कुछ परिवर्तन रोग की ओर या स्वास्थ्य की ओर होते हैं उन समस्त तत्त्वों का कण-कण ख़ुदा तआला की इच्छानुसार पग आगे-पीछे रखता है ।

अब तनिक आँख खोलकर देख लेना चाहिए कि इस प्रकार के माध्यम के स्वीकार करने में जो क़ुर्आन शरीफ़ में ठहराए गए हैं कौन सा द्वैतवाद अनिवार्य है तथा ख़ुदा तआला की प्रकृति की शान में कौन सा अन्तर आ जाता है अपितु यह तो मारिफ़त (अध्यात्म ज्ञान) के रहस्यों तथा नीतिगत सूक्ष्मताओं की वे बातें हैं जो प्रकृति के नियम के प्रत्येक पन्ने पर लिखी हुई दिखाई देती हैं तथा इस व्यवस्था को स्वीकार किए बिना ख़ुदा तआला की पूर्ण क़ुदरत सिद्ध ही नहीं हो सकती और न उसकी ख़ुदाई चल सकती है । भला जब तक उसका एक-एक कण फ़रिश्ता बनकर उसके आज्ञा पालन में न लगा हो तब तक यह सारा कारोबार उसकी इच्छानुसार क्योंकर चल सकता है ? कोई हमें समझाए तो सही । यदि आकाशीय फ़रिश्तों की आध्यात्मिक व्यवस्था से ख़ुदा तआला की शक्ति-सम्पन्न प्रतिष्ठा पर कुछ धब्बा लग सकता है तो फिर क्या कारण है कि उन्हीं फ़रिश्तों की शारीरिक व्यवस्था के स्वीकार करने से जो आध्यात्मिक व्यवस्था का बिल्कुल समवर्ण और एक रूप है, ख़ुदा तआला की पूर्ण क़ुदरत पर कोई धब्बा नहीं लग सकता अपितु सत्य तो यह है कि आर्य इत्यादि हमारे विरोधियों ने अंधेपन की अधिकता के कारण ऐसे-ऐसे अनुचित ऐतिराज़ किए हैं जिनके मूल आधार बहुत सी द्वैतवादी टिप्पणियों के साथ उन के घर में भी विद्यमान हैं तथा अकारण अपनी अज्ञानता के कारण एक उत्तम सत्य को बेहूदगी और झूठ के रंग में समझ लिया है ।

چشم بد اندیش کہ برکندہ باد   عیب نماید ہنرش در نظر

(अनुवाद :- द्वेष रखने वाले व्यक्ति की दृष्टि बाहर निकली होती है उसका प्रत्येक कौशल लोगों को दोष दिखाई देता है । - अनुवादक)

यह भी स्मरण रखना चाहिए कि इस्लामी शरीअत की दृष्टि से फ़रिश्तों की विशेषताओं की श्रेणी मानवीय विशेषताओं से कुछ अधिक नहीं अपितु मनुष्यों की विशेषताएँ फ़रिश्तों की विशेषताओं से श्रेष्ठतम हैं

तथा शारीरिक व्यवस्था या आध्यात्मिक व्यवस्था में उनका माध्यम बनाया जाना उनकी श्रेष्ठता को सिद्ध नहीं करता अपितु क़ुर्आन शरीफ़ के पथ-प्रदर्शन की दृष्टि से वे सेवकों की भाँति इस काम में लगाए गए हैं । जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है - وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ **(व सख़्ख़रा लकुमुश्शम्सा वलक़मरा)**[1] अर्थात वह ख़ुदा जिसने सूर्य और चन्द्रमा को तुम्हारी सेवा में लगा रखा है । उदाहरण के तौर पर देखना चाहिए कि एक डाकिया समय के एक राजा की ओर से किसी देश के प्रान्त या गवर्नर की सेवा में पत्र पहुँचा देता है तो इससे क्या यह सिद्ध हो सकता है कि वह डाकिया जो उस राजा और गर्वनर जनरल में माध्यम है गवर्नर जनरल से श्रेष्ठ है । अतः भली भाँति समझ लो, यही उदाहरण उन माध्यमों का है, जो शारीरिक आध्यात्मिक व्यवस्था में सर्वशक्तिमान (ख़ुदा) के इरादों को पृथ्वी पर पहुँचाते तथा उन्हें कार्यान्वित करने में व्यस्त हैं । अल्लाह तआला क़ुर्आन शरीफ़ के कई स्थानों में व्याख्या के साथ फ़रमाता है कि जो कुछ पृथ्वी और आकाश में उत्पन्न किया गया है वे समस्त वस्तुएँ अपने अस्तित्व में मनुष्य की तुफ़ैली[2] हैं अर्थात् मात्र मनुष्य के हित के लिए उत्पन्न की गई हैं तथा मनुष्य अपने पद में सर्वश्रेष्ठ, उच्च और सब का स्वामी है जिसकी सेवा में ये समस्त वस्तुएँ लगा दी गई हैं । जैसा कि वह फ़रमाता है -

وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَآئِبَيْنِ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۚ وَاٰتٰـكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا سَاَلْتُمُوْهُ ؕ وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ

(व सख़्ख़रा लकुमुश्शम्सा वलक़मरा दाइबैन व सख़्ख़रा लकुमुल्लयला वन्नहारा व आताकुम मिन कुल्ले मा सअलतुमूहो व इन तउद्दू नैमतल्लाहे ला तुहसूहा)[3] هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ لَكُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا **(हुवल्लज़ी ख़लक़ा लकुम मा फ़िलअर्ज़े जमीअन)**[4] और मुफ़्त काम पर लगाया तुम्हारे लिए सूर्य और चन्द्रमा को जो हमेशा घूमते रहते हैं अर्थात् जो अपने विवरण और विशेषताओं की दृष्टि से एक अवस्था में नहीं रहते । उदाहरणतया रबी के महीनों में सूर्य की जो विशेषता होती

[1] इब्राहीम : 34 । [2] दूसरों के सहारे गुज़ारा करने वाले । (अनुवादक)
[3] इब्राहीम : 34 । [4] अल बक़रह : 30 ।

है वह पतझड़ के महीनों में कदापि नहीं होती । अत: इस ढंग से सूर्य और चन्द्रमा हमेशा घूमते रहते हैं । कभी उनके चक्र लगाने से बसंत ऋतु आ जाती है और कभी हेमन्त ऋतु कभी एक विशेष प्रकार की विशेषताएँ उनसे प्रकटन में आती हैं और कभी इसके विपरीत विशेषताएँ प्रकट होती हैं । आगे फ़रमाया - कि मुफ़्त काम पर लगाया । तुम्हारे लिए रात और दिन को तथा तुम्हें प्रत्येक वस्तु में से वह समस्त सामान जिस को तुम्हारे स्वभावों ने माँगा अर्थात् उन समस्त वस्तुओं को दिया जिन की तुम्हें आवश्यकता थी और यदि तुम ख़ुदा तआला की नैमतों की गिनती करना चाहो तो कदापि नहीं गिन सकोगे, वह वही ख़ुदा है जिसने जो कुछ पृथ्वी पर है तुम्हारे लाभ के लिए उत्पन्न किया है । फिर एक और आयत में अल्लाह तआला फ़रमाता है - لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِيْٓ اَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ (**लक़द ख़लक़्नलइन्साना फ़ी अहसने तक़वीम**)[1] अर्थात् मनुष्य को हमने नितान्त संतुलति श्रेणी पर उत्पन्न किया है और वह इस संतुलन की विशेषता में समस्त सृष्टि से उत्तम और श्रेष्ठ है । फिर एक और स्थान में फ़रमाता है कि –

اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ عَلَى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالْجِبَالِ فَاَبَيْنَ اَنْ يَّحْمِلْنَهَا وَاَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْاِنْسَانُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ ظَلُوْمًا جَهُوْلًا

(इन्ना अरज़्नलअमानता अलस्वमावाते वलअर्ज़े वलजिबाले फ़अबयना अंय्यहमिलनहा व अशफ़क़्ना मिन्हा व हमलहलइन्सानो इन्नहू काना ज़लूमन जहूलन)[2]

अर्थात् हमने अपनी अमानत को जिस से अभिप्राय अल्लाह तआला से प्रेम, अनुराग और विपत्तियों का भाजन होकर फिर पूर्ण अनुसरण करना है। आकाश के समस्त फ़रिश्तों और पृथ्वी की समस्त सृष्टियों और पर्वतों पर प्रस्तुत किया जो प्रत्यक्ष में शक्तिशाली महाकाय वस्तुएँ थीं । अत: उन समस्त वस्तुओं ने उस अमानत को उठाने से इन्कार कर दिया तथा उस की श्रेष्ठता को देखकर भयभीत हो गईं, परन्तु मनुय ने उस को उठा लिया क्योंकि मनुष्य में दो विशेषताएँ थीं । एक यह कि वह ख़ुदा तआला के मार्ग में अपने प्राणों पर अत्याचार कर सकता था । दूसरी विशेषता यह

[1] अत्तीन : 5 । [2] अहज़ाब : 73 ।

थी कि वह ख़ुदा तआला के प्रेम में उस सीमा तक पहुँच सकता था जो ख़ुदा के अतिरिक्त सभी को भुला दे । फिर एक और स्थान पर फ़रमाया -

إِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ إِنِّيْ خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ طِيْنٍ ﴿۷۲﴾ فَإِذَا سَوَّيْتُهٗ وَنَفَخْتُ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِيْ
فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ ﴿۷۳﴾ فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُوْنَ ﴿۷۴﴾ إِلَّآ إِبْلِيْسَ

(इज़ क़ाला रब्बुका लिलमलाइकते इन्नी ख़ालिक़ुन बशरन मिन तीनिन फ़इज़ा सव्वयतोहू व नफ़ख़्तो फ़ीहे मिन रूही फ़क़ऊ लहू साजिदीन फ़सजदल मलाइकतो कुल्लोहुम अजमऊन इल्ला इब्लीस)[1] अर्थात् स्मरण करो वह समय जब तेरे ख़ुदा ने (जिसका तू पूर्णतम पात्र है) फ़रिश्तों को कहा कि मैं मिट्टी से एक मनुष्य उत्पन्न करने वाला हूँ । अत: जब मैं उसको पूर्ण संतुलन पर उत्पन्न कर लूँ तथा अपनी रूह में से उसमें फूंक दूँ तो तुम उसके लिए सज्दह में गिरो अर्थात् नितान्त विनम्रता से उसकी सेवा में व्यस्त हो जाओ तथा ऐसी सेवा करने में झुक जाओ कि जैसे तुम उसे सज्दह कर रहे हो । अत: समस्त फ़रिश्ते पूर्ण मनुष्य के समक्ष सज्दह में गिर पड़े परन्तु शैतान जो इस सौभाग्य से वंचित रह गया, जानना चाहिए कि यह सज्दह का आदेश उस समय से संबंधित नहीं है कि जब हज़रत आदम उत्पन्न किए गए अपितु फ़रिश्तों को यह पृथक आदेश दिया गया कि जब कोई मनुष्य अपने यथार्थ मानवता के पद तक पहुँचे और उसको मानवीय संतुलन प्राप्त हो जाए और उसमें ख़ुदा तआला की रूह निवास कर ले तो तुम उस कामिल (पूर्ण) के आगे सज्दह में गिरा करो । अर्थात् आकाशीय प्रकाशों के साथ उस पर उतरो और उस पर रहमत और दुआ भेजो । अत: यह उस अनादि नियम की ओर संकेत है जो ख़ुदा तआला अपने सदात्मा और ख़ुदा वाले बन्दों के साथ हमेशा जारी रखता है । जब कोई मनुष्य किसी युग में आध्यात्मिक संतुलन प्राप्त कर लेता है तथा ख़ुदातआला की रूह उसके अन्दर निवास करती है अर्थात् अपने प्राण से विरक्त होकर ख़ुदा के साथ अनश्वर जीवन की श्रेणी प्राप्त करता है तो उस पर विशेष तौर पर फ़रिश्तों का उतरना प्रारंभ हो जाता है । यद्यपि ख़ुदा तआला के सानिध्य की खोज की प्रारंभिक

[1] सुआद : 72 से 75 ।

परिस्थितियों में भी फ़रिश्ते उसकी सहायता और सेवा में लगे होते हैं, परन्तु यह उतरना ऐसा पूर्णतम होता है कि सज्दह का आदेश रखता है और सज्दह के शब्द से ख़ुदा तआला ने यह प्रकट कर दिया कि फ़रिश्ते इन्साने कामिल (पूर्ण इन्सान) से श्रेष्ठ नहीं हैं अपितु वे राजाओं के सेवकों की भाँति पूर्ण इन्सान के आगे सम्मान हेतु सज्दह कर रहे हैं । इसी प्रकार ख़ुदा तआला ने सूरह 'अश्शम्स' में नितान्त सूक्ष्म संकेतों और रूपकों में पूर्ण इन्सान के पद को पृथ्वी-आकाश के समस्त निवासियों से श्रेष्ठ और उच्चतम वर्णन किया है - जैसा कि वह फ़रमाता है -

وَالشَّمْسِ وَضُحٰهَا ۝٢ وَالْقَمَرِ اِذَا تَلٰهَا ۝٣ وَالنَّهَارِ اِذَا جَلّٰهَا ۝٤ وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰهَا ۝٥
وَالسَّمَآءِ وَمَا بَنٰهَا ۝٦ وَالْاَرْضِ وَمَا طَحٰهَا ۝٧ وَنَفْسٍ وَّمَا سَوّٰهَا ۝٨ فَاَلْهَمَهَا فُجُوْرَهَا
وَتَقْوٰهَا ۝٩ قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰهَا ۝١٠ وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰهَا ۝١١ كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِطَغْوٰهَآ ۝١٢
اِذِ انْۢبَعَثَ اَشْقٰهَا ۝١٣ فَقَالَ لَهُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ نَاقَةَ اللّٰهِ وَسُقْيٰهَا ۝١٤ فَكَذَّبُوْهُ فَعَقَرُوْهَا
فَدَمْدَمَ عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ بِذَنْۢبِهِمْ فَسَوّٰهَا ۝١٥ وَلَا يَخَافُ عُقْبٰهَا ۝١٦

(वश्शम्से व ज़ुहाहा वलक़मरे इजा तलाहा वन्नहारे इज़ा जल्लाहा वल्लयले इज़ा यग़शाहा वस्समाए वमा बनाहा वलअर्ज़े वमा तहाहा व नफ़्सिम व मा सव्वाहा फ़अलहमहा फ़ुजूरहा व तक़वाहा क़द अफ़लहा मन ज़क्काहा व क़द ख़ाबा मन दस्साहा कज़्ज़बत समूदो बितग़वाहा इज़िम्बअसा अशक़ाहा फ़क़ाला लहुम रसूलुल्लाहे नाक़तल्लाहे व सुक़याहा फ़कज़्ज़बूहो फ़अक़रूहा फ़दमदमा अलयहिम रब्बोहुम बिज़ंबेहिम फ़सव्वाहा वला यख़ाफ़ो उक़बाहा ।)[1]

अर्थात सौगंध है सूर्य और उसकी धूप की और सौगंध है चन्द्रमा की जब वह सूर्य का अनुसरण करे और सौगंध है दिन की जब वह अपने प्रकाश को प्रकट करे और सौगंध है उस रात की जो बिल्कुल अंधकारमय हो और सौगंध है पृथ्वी की और उसकी जिसने उसे बिछाया और सौगंध है मनुष्य के अस्तित्व की और उसकी जिसने उसे पूर्ण संतुलन और स्थायित्व की शैली के सम्पूर्ण विभिन्न कौशल प्रदान किए तथा किसी

[1] अश्शम्स : 2 से 16 ।

कौशल से वंचित नहीं रखा अपितु समस्त विभिन्न कौशल जो पहली सौगंधों के अन्तर्गत वर्णन किए गए हैं उसमें एकत्र कर दिए इस प्रकार कि पूर्ण मनुष्य का अस्तित्व सूर्य और उसकी धूप का भी कौशल अपने अन्दर रखता है तथा चन्द्रमा की विशेषताएँ भी उसमें पाई जाती हैं कि वह लाभोपार्जन दूसरे से कर सकता है । एक प्रकाश से बतौर लाभ अपने अन्दर भी प्रकाश ले सकता है तथा इसमें प्रकाशित दिन की विशेषताएँ विद्यमान हैं जिस प्रकार परिश्रम और मेहनत करने वाले लोग दिन के प्रकाश में अपने व्यवसाय को भली भाँति पूर्ण कर सकते हैं, इसी प्रकार सत्य के अभिलाषी और ख़ुदा के सानिध्य के मार्गों को अपनाने वाले पूर्ण मनुष्य के पद-चिन्हों पर चलकर बड़ी सरलता और सफ़ाई से अपने धार्मिक प्रयोजनों को पूर्ण करते हैं । अतः वह दिन की भाँति स्वंय को पूर्ण स्वच्छता के साथ प्रकट कर सकता है और दिन की समस्त विशेषताएँ अपने अन्दर रखता है ।❶ अन्धेरी रात से भी पूर्ण मनुष्य को एक अनुरूपता है कि वह बावजूद असीम श्रेणी के त्याग और सन्यास के जो उसे ख़ुदा की ओर से प्राप्त है ख़ुदाई नीति और हित की दृष्टि से अपने अस्तित्व की तामसिक इच्छाओं की ओर भी कभी-कभी ध्यान चला जाता

हाशिया :- ❶ सूर्य पूर्ण नीति के साथ सात सौ तीस निर्धारणों में स्वयं को आकृतिमान करके संसार पर विभिन्न प्रकार के प्रभाव डालता है और प्रत्येक आकृति के कारण एक विशेष नाम उसे प्राप्त है और रविवार, सोमवार, मंगलवार इत्यादि वास्तव में विशेष-विशेष निर्धारणों, साधनों और प्रभावों की दृष्टि से सूर्य के ही नाम हैं । जब ये विशेष अनिवार्यताएँ बोलने के समय मस्तिष्क में न रखी जाएँ और केवल अकेले और चरितार्थ होने की स्थिति में नाम लिया जाए तो उस समय सूर्य कहेंगे, परन्तु जब उसी सूर्य के विशेष-विशेष साधनों और प्रभावों और स्थानों को मस्तिष्क में दृष्टिगत रखकर बोलेंगे तो उसे कभी दिन कहेंगे और कभी रात, कभी उसका नाम रविवार रखेंगे और कभी सोमवार और कभी सावन और कभी भादों कभी क्वार कभी क़ार्तिक । चुनाँचे ये समस्त नाम सूर्य के ही हैं । मनुष्य भी विभिन्न निर्धारणों, विभिन्न समयों, स्थानों, परिस्थितियों और विभिन्न नामों से नामित हो जाता है । कभी पवित्र आत्मा कहलाता है कभी तामसिक और कभी लव्वामा (राजसिक वृत्ति) कभी सात्विक वृत्ति। अतः इसके भी उतने ही नाम हैं जितने सूर्य के, परन्तु विस्तार के भय से इतने वर्णन को ही पर्याप्त समझा गया । (इसी से)

है अर्थात जो जो अस्तित्व के अधिकार मनुष्य पर रखे गए हैं जो प्रत्यक्षतया प्रकाशमय होने के विपरीत और बाधक ज्ञात होते हैं जैसे खाना-पीना, सोना और पत्नी के अधिकारों की अदायगी, बच्चों की ओर ध्यान देना ये सब अधिकार पूरे करता है । थोड़ी देर के लिए इस अंधकार को अपने लिए पसन्द कर लेता है न कि इस कारण से कि उसका वास्तविक तौर पर अन्धकार की ओर झुकाव है, अपितु इस कारण से कि खुदावन्द जो बहुत जानने वाला और नीतिवान है उसका इस ओर ध्यान प्रदान करता है ताकि आध्यात्मिक कष्ट और परिश्रम से कुछ आराम पाकर फिर उन कठिन परिश्रमों को उठाने के लिए तैयार हो जाए । जैसा कि किसी का शेर (पद्य) है -

چشم شہباز کار دانانِ شکار   از بہر کشادن ست گردوختہ اند

(अनुवाद : बाज़ की आँख शिकार पर लगी हुई है वह देखने के लिए है यद्यपि कि वह बंद है । - अनुवादक)

अतः इसी प्रकार ये कामिल लोग जब असीम श्रेणी की हार्दिक घुटन, पिघलन, शोक और संताप के प्रभुत्व के समय एक सीमा तक स्वार्थ पर आनन्दों से लाभ प्राप्त कर लेते हैं तो फिर उनका निर्बल शरीर रूह की मित्रता के लिए नए सिरे से शक्तिशाली और सबल हो जाता है तथा इस थोड़ी सी ओट के कारण बड़े-बड़े प्रकाशमय पड़ावों से गुज़र जाता है । इसके अतिरिक्त मनुष्य के अस्तित्व में रात की दूसरी अन्य सूक्ष्म विशेषताएँ भी पाई जाती हैं, जिन्हें खगोल विद्या, ज्योतिष विद्या और भौतिकी की सूक्ष्म दृष्टि ने खोज निकाला है । इसी प्रकार पूर्ण मनुष्य के अस्तित्व की आकाश से भी एकरूपता है । उदाहरणतया जिस प्रकार आकाश का पोल इतना विशाल और विस्तृत है कि किसी वस्तु से भर नहीं सकता, इसी प्रकार इन बुज़ुर्गों की मानवीय रूह असीम श्रेणी की विशालताएँ अपने अन्दर रखती हैं और बावजूद सहस्त्रों अध्यात्म ज्ञानों और सूक्ष्मताओं को प्राप्त करने के फिर भी मा अरफ़नाका (हम ने तुझे नहीं पहचाना) का घोष करता ही रहता है तथा जिस प्रकार आकाश का पोल प्रकाशमान नक्षत्रों से भरा हुआ है इसी प्रकार नितान्त प्रकाशमान शक्तियाँ उसमें भी रखी गई हैं कि जो आकाश के नक्षत्रों की भाँति चमकती हुई दिखाई देती

हैं । इसी प्रकार पूर्ण मनुष्य (इन्साने कामिल) के अस्तित्व को पृथ्वी से भी पूर्ण एकरूपता है अर्थात् जिस प्रकार उत्तम और प्रथम श्रेणी की ज़मीन यह विशेषता रखती है कि जब उसमें बीजारोपण किया जाए फिर भली भाँति हल चलाया जाए, सिंचाई हो और उस पर खेती बाड़ी से संबंधित परिश्रम के समस्त स्तर पूर्ण कर दिए जाएँ तो वह अन्य ज़मीनों की अपेक्षा हज़ार गुना अधिक फल लाती है तथा उसका फल अन्य फलों की अपेक्षा अत्यंत बढ़िया, मृदुल, स्वादिष्ट तथा अपनी संख्या और स्तर में असीम श्रेणी तक बढ़ा हुआ होता है । इसी प्रकार पूर्ण मनुष्य के अस्तित्व का हाल है कि ख़ुदाई आदेशों के बीजारोपण से विचित्र हरियाली लेकर उसके शुभ कर्मों के पौधे निकलते हैं, उसके फल ऐसे बढ़िया और असीम श्रेणी के स्वादिष्ट होते हैं कि प्रत्येक देखने वाले को ख़ुदा तआला की पवित्र कुदरत स्मरण होकर सुब्हान अल्लाह सुब्हान अल्लाह कहना पड़ता है। अतः यह आयत وَنَفۡسٍ وَّمَا سَوّٰىهَا **(व नफ़्सिन वमा सव्वाहा)** स्पष्ट तौर पर बता रही है कि पूर्ण मनुष्य अपने अर्थ और विवरण की दृष्टि से एक संसार है तथा बृहत संसार की समस्त विशेषताएँ और लक्षण संक्षिप्त तौर पर अपने अन्दर एकत्र रखता है जैसा कि ख़ुदा तआला ने सूर्य की विशेषताओं से प्रारंभ करके पृथ्वी तक जो हमारे रहने का स्थान है, समस्त वस्तुओं के गुण सांकेतिक रंग में वर्णन किए अर्थात् बतौर सौगंधों के उन की चर्चा की । तत्पश्चात् इन्साने कामिल (पूर्ण मनुष्य) के अस्तित्व की चर्चा की ताकि ज्ञात हो कि इन्साने कामिल का अस्तित्व उन समस्त विभिन्न कौशलों का संकलन-कर्ता है, जो पहली वस्तुओं में जिनकी सौगंधे खाई गईं पृथक-पृथक तौर पर पाई जाती हैं । यदि यह कहा जाए कि ख़ुदा तआला ने उन अपनी उत्पन्न की हुई वस्तुओं जो उसके अस्तित्व के मुकाबले पर निराधार और तुच्छ हैं क्यों सौगंधें खाईं । तो इसका उत्तर यह है कि सम्पूर्ण क़ुर्आन शरीफ़ में यह एक सामान्य शैली और ख़ुदा का नियम है कि वह कुछ काल्पनिक मामलों के सिद्धीकरण के लिए ऐसी बातों को उद्धृत करता है जो सामान्य तौर पर अपनी विशेषताओं पर स्पष्ट, खुला-खुला और व्यापक प्रमाण रखती हैं जैसा कि इसमें किसी को भी सन्देह नहीं हो सकता कि सूर्य विद्यमान है और उसकी धूप भी है, चन्द्रमा विद्यमान है और वह सूर्य से प्रकाश प्राप्त करता है और प्रकाशमय

दिन भी सब को दिखाई देता है, रात भी सब को दिखाई देती है और आकाश का पोल भी सब की दृष्टि के सामने है तथा पृथ्वी तो स्वयं मनुष्यों के निवास का स्थान है । अब चूँकि ये समस्त वस्तुएँ अपना खुला-खुला अस्तित्व और खुले-खुले गुण रखती हैं जिनमें किसी को आपत्ति नहीं हो सकती और मनुष्य की आत्मा ऐसी गुप्त और काल्पनिक वस्तु है कि स्वयं उसके अस्तित्व में ही सैकड़ों विवाद खड़े हो रहे हैं । बहुत से सम्प्रदाय ऐसे हैं कि वे इस बात को स्वीकार ही नहीं करते कि नफ़्स अर्थात मनुष्य की रूह (आत्मा) भी कोई स्थायी और स्वयं में स्थापित रहने वाली वस्तु है जो शरीर की पृथकता के पश्चात सदा के लिए स्थापित रह सकती है और जो कुछ लोग आत्मा के अस्तित्व, उसकी अनश्वरता और स्थायित्व को स्वीकार करते हैं वे भी इसकी आन्तरिक योग्यताओं का यथायोग्य महत्व नहीं समझते अपितु कुछ तो इतना ही समझ बैठे हैं कि हम संसार में केवल इसी उद्देश्य के लिए आए हैं कि जानवरों की भाँति खाने-पीने तथा स्वार्थपरता के आनन्दों में आयु व्यतीत करें । वे इस बात को जानते भी नहीं कि मनुष्य की आत्मा कितनी श्रेष्ठ श्रेणी की शक्तियाँ अपने अन्दर रखती है और यदि वह कौशलों को अर्जित करने की ओर ध्यान दे तो बहुत कम समय में समस्त संसार के विभिन्न कौशलों, योग्यताओं तथा उसके प्रकारों को एक वृत्त की भाँति अपनी परिधि में ले सकती है । अत: अल्लाह तआला ने इस शुभ सूरह में मनुष्य की आत्मा और फिर उसकी अनन्त शेष विशेषताओं का प्रमाण देना चाहा है । अत: प्रथम उसने विचारों को फेरने के लिए सूर्य और चन्द्रमा इत्यादि वस्तुओं की विभिन्न विशेषताएँ वर्णन करके फिर मनुष्य की आत्मा की ओर संकेत किया कि वह उन समस्त विभिन्न कौशलों की संकलनकर्ता है । जिस स्थिति में मनुष्य की आत्मा में ऐसे श्रेष्ठ श्रेणी के कौशल और अपनी पूर्णता के साथ विशेषताएँ विद्यमान हैं जो आकाशीय पिण्डों और पृथ्वी के पदार्थों में भिन्न-भिन्न तौर पर पाई जाती हैं तो यह बहुत बड़ी मूर्खता होगी कि ऐसे महान तथा विभिन्न कौशलों के संकलनकर्ता के सन्दर्भ में यह सोचा जाए कि वह कुछ वस्तु नहीं जो मृत्यु के पश्चात शेष रह सके अर्थात् जबकि ये समस्त विशेषताएँ जो इन विद्यमान और महसूस वस्तुओं में हैं जिन का स्थायी अस्तित्व स्वीकार करने में तुम्हें

कुछ आपत्ति नहीं, यहाँ तक कि एक अंधा भी धूप का अहसास करके सूर्य के अस्तित्व का विश्वास करता है मनुष्य की आत्मा में सब के सब सामूहिक तौर पर विद्यमान हैं तो आत्मा के स्थायी और स्वयं में स्थापित अस्तित्व में तुम्हें क्या आपत्ति है । क्या संभव है कि जो वस्तु अपने अस्तित्व में कुछ भी नहीं वह स्वयं में समस्त विद्यमान वस्तुओं की विशेषताएँ एकत्र रखती हो। इस स्थान पर सौगंध खाने की शैली को अल्लाह तआला ने इस कारण पसन्द किया है कि सौगंध साक्ष्य के स्थान में होती है । इसी कारण अधिकृत शासक भी जब अन्य गवाह मौजूद न हों तो सौगंध पर भरोसा करते हैं तथा एक बार की सौगंध से वे लाभ प्राप्त कर लेते हैं जो कम से कम दो गवाहों से प्राप्त कर सकते हैं । चूँकि मानसिक, परम्परागत, कानूनी और शरई (शरीअत के) तौर पर सौगंध अवलोकन के स्थान पर समझी जाती है । चुनाँचै इसी आधार पर ख़ुदा तआला ने इस स्थान पर उसे गवाह के तौर पर ठहरा दिया है । अतः ख़ुदा तआला का यह कहना कि सौगंध है सूर्य की और उसकी धूप की, वास्तव में अपना अभिप्रायिक अर्थ यह रखता है कि सूर्य और उसकी धूप ये दोनों मनुष्य की आत्मा के अपने अस्तित्व के साथ विद्यमान और स्थापित होने के वर्तमान गवाह हैं, क्योंकि सूर्य में जो-जो विशेषताएँ गर्मी और प्रकाश इत्यादि पाए जाते हैं, ये ही विशेषताएँ कुछ अधिकता सहित मनुष्य की आत्मा में भी विद्यमान हैं । मुकाशिफ़ात (परोक्ष की बातों का ज्ञान हो जाना) का प्रकाश और ध्यान की गर्मी जो पूर्ण आत्माओं में पाई जाती है उसके चमत्कार सूर्य की गर्मी और प्रकाश से कहीं बढ़कर हैं । अतः जब सूर्य स्वयं अपने अस्तित्व के साथ विद्यमान है तो विशेषताओं में जो उस के अनुरूप और समान है अपितु उस से बढ़कर अर्थात मनुष्य की आत्मा, वह क्योंकर अपने अस्तित्व के साथ विद्यमान न होगी । इसी प्रकार ख़ुदा तआला का यह कहना कि सौगंध है चन्द्रमा की जब वह सूर्य का अनुसरण करे । इस के अभिप्रायिक अर्थ ये हैं कि चन्द्रमा अपनी इस विशेषता के साथ कि वह सूर्य से बतौर लाभ प्रकाश प्राप्त करता है, मनुष्य की आत्मा के अपने अस्तित्व के साथ विद्यमान और स्थापित होने पर वर्तमान गवाह है, क्योंकि जिस प्रकार चन्द्रमा सूर्य से प्रकाशोपार्जन करता है उसी प्रकार मनुष्य की आत्मा का जो तत्पर सत्य की अभिलाषी

है, एक अन्य पूर्ण मनुष्य का अनुसरण करके उसके प्रकाश में से प्राप्त कर लेती है तथा उसके आन्तरिक लाभ से लाभान्वित हो जाती है अपितु चन्द्रमा से बढ़कर प्रकाश से लाभान्वित होती है, क्योंकि चन्द्रमा तो प्रकाश को प्राप्त करके फिर छोड़ भी देता है परन्तु यह कभी नहीं छोड़ती । अत: जबकि प्रकाश से लाभान्वित होने में यह चन्द्रमा की शक्तिशाली भागीदार है और दूसरे चन्द्रमा के समस्त गुण और विशेषताएँ अपने अन्दर रखती है, तो फिर क्या कारण कि चन्द्रमा को तो अस्तित्व के साथ विद्यमान और स्थापित माना जाए परन्तु मनुष्य की आत्मा के स्थायी तौर पर विद्यमान होने से पूर्णतया इन्कार कर दिया जाए । अत: इसी प्रकार ख़ुदा तआला ने इन समस्त वस्तुओं को जिन की चर्चा मनुष्य की आत्मा की पहले सौगंध खाकर की गई है, अपने गुणों की दृष्टि से गवाह और बोलता साक्षी ठहरा कर इस बात की ओर ध्यान आकर्षित किया है कि मनुष्य की आत्मा वास्तविक तौर पर विद्यमान है तथा इसी प्रकार प्रत्येक स्थान पर क़ुर्आन शरीफ़ में कुछ-कुछ वस्तुओं की सौगंध खाई हैं उन सौगंधों से प्रत्येक स्थान पर यही मतलब और उद्देश्य है कि ताकि व्यापक बात को गुप्त रहस्यों के लिए जो उनके समवर्ण हैं बतौर गवाहों के प्रस्तुत किया जाए, परन्तु इस स्थान पर यह प्रश्न होगा कि मनुष्य की आत्मा के अस्तित्व के साथ विद्यमान होने के लिए जो सौगंधों के रूप में गवाहों को प्रस्तुत किया गया है उन गवाहों की विशेषताएँ स्पष्ट तौर पर मनुष्य की आत्मा में कहाँ पाई जाती हैं तथा इस का प्रमाण क्या है कि पाई जाती हैं । इस भ्रम के निवारण के लिए अल्लाह तआला इस के पश्चात फ़रमाता है -

فَأَلْهَمَهَا فُجُورَهَا وَتَقْوَاهَا ۝٩ قَدْ أَفْلَحَ مَنْ زَكَّاهَا ۝١٠ وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسَّاهَا ۝١١

(फ़अल्हमहा फ़ुज़ूरहा व तक़्वाहा – क़द अफ़्लहा मन ज़क्काहा व क़द ख़ाबा मन दस्साहा)[1] अर्थात् ख़ुदा तआला ने मनुष्य की आत्मा को उत्पन्न करके अन्धकार और प्रकाश, वीरानी और हरियाली के दोनों मार्ग उसके लिए खोल दिए हैं । जो व्यक्ति अंधकार और फ़ुजूर अर्थात् व्यभिचार के मार्ग अपनाए तो उसको उन मार्गों में पूर्णता की श्रेणी तक पहुँचाया जाता है यहाँ तक कि अन्धकारमय रात से उसकी बहुत अधिक

[1] सूर: शम्स : 9 से 11 ।

एकरूपता हो जाती है और उसे पाप, व्यभिचार और तामसिक विचारों के अतिरिक्त अन्य किसी बात में उसे आनन्द नहीं मिलता, ऐसे ही साथी उसे अच्छे लगते हैं तथा ऐसे ही कार्य उस के हृदय को प्रसन्न करते हैं और उसके बुरे स्वभाव की स्थिति के अनुसार दुराचार के इल्हाम उसे होते रहते हैं । अर्थात् उसे हर समय दुराचार और दुष्चरित्रता के ही विचार सूझते हैं, अच्छे विचार उसके हृदय में उत्पन्न ही नहीं होते । यदि पापों से सुरक्षित रहने का प्रकाशमय मार्ग अपनाता है तो उसे उस प्रकाश को सहायता देने वाले इल्हाम होते रहते हैं । अर्थात् ख़ुदा तआला उसके हार्दिक प्रकाश का जो बीज की तरह उसके हृदय में विद्यमान हैं, अपने विशेष इल्हामों से पूर्णता तक पहुँचा देता है तथा उसके प्रकाशमान मुकाशिफ़ात की अग्नि को भड़का देता है, तब वह अपने चमकते हुए प्रकाश को देखकर तथा उसके फायदे और लाभ की विशेषता को परख कर पूर्ण विश्वास के साथ समझ लेता है कि सूर्य और चन्द्रमा का प्रकाश मुझ में भी विद्यमान है तथा आकाश के विशाल, उच्च और नक्षत्रों से भरे होने के अनुसार मेरे वक्षस्थल में भी प्रफुल्लता, उच्च साहस और हृदय तथा मस्तिष्क में प्रकाशमान शक्तियों का भण्डार विद्यमान है जो नक्षत्रों की भाँति चमक रहे हैं । तब उसे इस बात को समझने के लिए किसी अन्य बाहरी प्रमाण की कुछ भी आवश्यकता नहीं होती अपितु उसके अन्दर से ही एक पूर्ण प्रमाण का झरना हर समय जोश मारता है तथा उसके प्यासे हृदय को सींचता रहता है । यदि यह प्रश्न प्रस्तुत हो कि साधना के तौर पर उन अहंवाद और स्वार्थपरता वाली विशेषताओं का अवलोकन क्योंकर हो सके । तो इसके उत्तर में अल्लाह तआला फ़रमाता है -

قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰىهَا ۝ وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰىهَا ۝

(क़द अफ़्लहा मन ज़क्काहा व क़द ख़ाबा मन दस्साहा)

अर्थात जिस व्यक्ति ने अपनी आत्मा को उज्जवल और पवित्र किया और अधमताओं तथा निकृष्ट व्यवहारों से पूर्णरूपेण पृथक होकर ख़ुदा तआला के आदेशों के अधीन स्वयं को डाल दिया वह उस मनोकामना को प्राप्त करेगा और उसको अपनी आत्मा इस संसार की भाँति विभिन्न कौशलों का संकलन दिखाई देगी, परन्तु जिस व्यक्ति ने अपनी आत्मा को पवित्र नहीं किया अपितु अनुचित इच्छाओं के अन्दर

गाड़ दिया वह उस उद्देश्य की प्राप्ति में असफल रहेगा । इस भाषण का सारांश यह है कि निसन्देह मनुष्य की आत्मा में वे विभिन्न कौशल विद्यमान हैं जो समस्त संसार में पाए जाते हैं और उन पर विश्वास लाने के लिए यह एक सद्मार्ग है कि मनुष्य ख़ुदा के नियम के उद्देश्य के अनुसार आत्मा की पवित्रता की ओर ध्यान दे, क्योंकि आत्मा की पवित्रता की अवस्था में न केवल इल्मुल यक़ीन (ज्ञानद्वारा प्राप्त विश्वास) अपितु हक़्क़ुल यक़ीन (वास्तविकता को परख कर प्राप्त होने वाला विश्वास) के तौर पर उन गुप्त कौशलों का सत्य प्रकट हो जाएगा। तत्पश्चात् अल्लाह तआला एक उदाहरणस्वरूप समूद की क़ौम की चर्चा करके फ़रमाता है कि उन्होंने अपने स्वभाव में विद्यमान अवज्ञा के कारण अपने युग के नबी को झुठला दिया । इस झुठलाने के लिए एक बड़ा दुर्भाग्यशाली व्यक्ति उनमें से अग्रसर हुआ । उस युग के रसूल ने उन्हें सदुपदेश के तौर पर कहा - **नाक़तुल्लाह** अर्थात् ख़ुदा तआला की ऊंटनी और उस के पानी पीने के स्थान में बाधा न डालो, परन्तु उन्होंने न माना और ऊँटनी के पैर काट दिए । अत: इस अपराध के दण्डस्वरूप अल्लाह तआला ने उन पर मृत्यु की मार मारी और उन्हें मिट्टी में मिला दिया । ख़ुदा तआला ने इस बात की तनिक परवाह न की कि उनके मरने के पश्चात उनकी विधवा स्त्रियों और अनाथ बच्चों तथा असहाय परिवारों का क्या होगा । यह एक अत्यन्त सूक्ष्म उदाहरण है जो ख़ुदा तआला ने मनुष्य की आत्मा को अल्लाह की ऊँटनी से एकरूपता देने के लिए यहाँ लिखा है । अभिप्राय यह है कि मनुष्य की आत्मा को भी वास्तव में इसी उद्देश्य के लिए उत्पन्न किया गया है ताकि वह अल्लाह की ऊँटनी का काम दे । उसके ख़ुदा में विरक्त होने की अवस्था में ख़ुदा तआला अपनी पवित्र झलक के साथ उस पर सवार हो, जैसे कोई ऊँटनी पर सवार होता है । अत: कामासक्त लोगों को जो सत्य से विमुख हो रहे हैं भर्त्सना और डराने के तौर पर फ़रमाया कि तुम लोग भी समूद की क़ौम की भाँति अल्लाह की ऊँटनी का 'सुक़या' अर्थात उसके पानी पीने का स्थान जो ख़ुदा को स्मरण करने और अध्यात्म ज्ञानों का झरना है जिस पर उस ऊँटनी का जीवन निर्भर है उस पर बन्द कर रहे हो, न केवल बन्द अपितु उसके पैर काटने की

चिन्ता में हो ताकि वह ख़ुदा तआला के मार्गों पर चलने से बिल्कुल रह जाए । अतः यदि तुम अपनी भलाई चाहते हो तो वह जीवन का पानी उस पर बन्द मत करो और अपनी अनुचित इच्छाओं के तीर और फरसे से उसके पैर मत काटो । यदि तुम ऐसा करोगे और वह ऊँटनी जो ख़ुदा तआला की सवारी के लिए तुम्हें दी गई है घायल होकर मर जाएगी तो तुम बिल्कुल व्यर्थ और शुष्क लकड़ी की भाँति समझ कर काट दिए जाओगे और फिर अग्नि में डाले जाओगे, फिर तुम्हारे मरणोपरांत ख़ुदा तआला तुम्हारे पीछे रहे शेष लोगों पर कदापि दया नहीं करेगा अपितु तुम्हारे पाप और व्यभिचार की विपत्ति उनके भी सामने आएगी और न केवल तुम कर्मों के दण्डस्वरूप मरोगे अपितु अपने परिवार और बच्चों को भी उसी बरबादी में डालोगे ।

इन नितान्त स्पष्ट आयतों से स्पष्ट तौर पर सिद्ध हो गया कि ख़ुदा तआला ने मनुष्य को समस्त सृष्टि से उत्तम और श्रेष्ठतम बनाया है तथा फ़रिश्ते, नक्षत्र और तत्त्व इत्यादि जो मनुष्य में और ख़ुदा तआला में बतौर माध्यमों के हस्तक्षेपक होकर कार्य कर रहे हैं । वह उनका इनके मध्य माध्यम होना उनकी श्रेष्ठता को सिद्ध नहीं करता तथा उन का मध्य में माध्यम होना मनुष्य को कोई सम्मान प्रदान नहीं करता अपितु स्वयं उनको सम्मान प्राप्त होता है कि वे ऐसी सुशील सृष्टि की सेवा में लगाए गए हैं । वास्तव में वे समस्त सेवक हैं न कि सेव्य । इस सन्दर्भ में हज़रत सादी शीराज़ी रहमतुल्लाह ने क्या ख़ूब कहा है -

ابرو باد و مہ و خورشید و فلک درکارند   تاتونانے بکف آری و بغفلت نخوری

ایں ہمہ از بہرتو سرگشتہ و فرمانبردار   شرط انصاف نباشد کہ تو فرماں نہ بری

(अनुवाद :- बादल, हवा, चन्द्रमा, सूर्य और आकाश कार्यरत हैं ताकि तू जीविका प्राप्त करे और लापरवाही से न खाए । ये सब के सब तेरे लिए व्याकुल और आज्ञाकारी हैं । यह तो न्यायोचित न होगा कि तू आज्ञापालन न करे । - अनुवादक)

फिर हम शेष भाषण की ओर लौटते हुए कहते हैं कि अल्लाह के फ़रिश्ते (जैसा कि हम पहले भी वर्णन कर चुके हैं) एक ही स्तर की

श्रेष्ठता और प्रतिष्ठा नहीं रखते और न एक ही प्रकार का कार्य उनके सुपुर्द है अपितु प्रत्येक फ़रिश्ता पृथक-पृथक कार्यों को पूर्ण करने के लिए नियुक्त किया गया है । संसार में जितने परिवर्तन और क्रान्तियाँ तुम देखते हो या जो कुछ घात में लगी शक्ति से प्रत्यक्ष कार्य में आता है या जितनी आत्माएँ और शरीर अपने बांछित कौशलों तक पहुँचते हैं, उन सब पर आकाशीय प्रभाव कार्यरत हैं कभी एक ही फ़रिश्ता विभिन्न प्रकार की योग्यताओं पर विभिन्न प्रकार के प्रभाव डालता है । उदाहरणतया जिब्राईल एक महान फ़रिश्ता है और आकाश के एक नितान्त प्रकाशमान सूर्य से संबंध रखता है । उसके सुपुर्द कई प्रकार की सेवाएँ हैं । उन्हीं सेवाओं के अनुसार जो उसके सूर्य से ली जाती हैं । अत: वह फ़रिश्ता यद्यपि प्रत्येक ऐसे व्यक्ति पर उतरता है जो ख़ुदा की वह्यी से सम्मानित किया गया हो। (नुज़ूल (उतरना) का मूल विवरण जो केवल प्रभावित करने के तौर पर है न कि यथार्थ तौर पर स्मरण रखना चाहिए ।)

परन्तु इस के उतरने के प्रभावों का क्षेत्र विभिन्न योग्यताओं और विभिन्न पात्रताओं की दृष्टि से छोटी-छोटी या बड़ी-बड़ी आकृतियों पर बंट जाता है । उसके आध्यात्मिक प्रभावों का नितान्त विशाल क्षेत्र वह क्षेत्र है जो हज़रत ख़ातमुल अंबिया स.अ.व. की वह्यी से संबंधित है । इसी कारण जो आध्यात्मिक ज्ञान, सच्चाइयाँ, नीतिगत कौशल, और भाषा की सुगमता क़ुर्आन शरीफ़ में कामिल और पूर्ण तौर पर पाई जाती हैं, यह महान पद अन्य किसी किताब को प्राप्त नहीं । यह भी स्मरण रखना चाहिए (जैसा कि हम पहले भी उसकी ओर संकेत कर चुके हैं) कि प्रत्येक फ़रिश्ते का प्रभाव मनुष्य की आत्मा पर दो प्रकार का होता है । प्रथम वह प्रभाव जो गर्भाशय में होने की अवस्था में ख़ुदा के आदेश से विभिन्न प्रकार के बीज पर विभिन्न प्रकार का प्रभाव डालता है । द्वितीय वह प्रभाव जो अस्तित्व की गुप्त योग्यताओं को अपने संभव कौशलों तक पहुँचाने के लिए कार्य करते हैं । उस द्वितीय प्रभाव को जब वह नबी या पूर्ण वली (ऋषि) के संबंध में हो वह्यी के नाम से नामित किया जाता है और यों होता है कि जब एक तैयार आत्मा अपने ईमान और प्रेम के प्रकाश के कौशल से वरदान के उदगम (ख़ुदा) के साथ मित्रता का संबंध स्थापित कर लेती है तथा ख़ुदा तआला का जीवन प्रदान करने वाला प्रेम

उसके प्रेम पर छा जाता है तो उस सीमा और उस समय तक जो कुछ मनुष्य को आगे पग बढ़ाने के लिए सामर्थ्य प्राप्त होती है यह वास्तव में उस गुप्त प्रभाव का प्रभाव प्रकट होता है जो ख़ुदा तआला के फ़रिश्ते ने मनुष्य की गर्भावस्था में किया होता है । तत्पश्चात् जब मनुष्य उस पहले प्रभाव के आकर्षण से यह पद प्राप्त कर लेता है तो फिर वही फ़रिश्ता नए सिरे से उस पर अपना प्रकाशपूर्ण प्रभाव डालता है, परन्तु यह नहीं कि अपनी ओर से अपितु वह मध्यस्थ सेवक होने के कारण उस नाली की भाँति जो एक ओर से पानी को खींचती और दूसरी ओर पानी को पहुँचा देती है । ख़ुदा तआला के वरदान का प्रकाश अपने अन्दर खींच लेता है । फिर बिल्कुल उस समय में कि जब मनुष्य दो प्रेमों के मिलन के कारण रूहुलक़ुदुस (पवित्र आत्मा) की नाली के निकट स्वयं को रख देता है तो उसी समय उस नाली में से वह्यी का दान उसके अन्दर गिर जाता है अथवा यों कहो कि उस समय जिब्राईल अपनी प्रकाशमान छाया उस तैयार हृदय पर डाल कर अपना एक प्रतिबिंबित चित्र उसके अन्दर लिख देता है। तब जैसे उस फ़रिश्ते का केन्द्र जो आकाश पर है जिब्राईल नाम है। उस प्रतिबिंबित चित्र का नाम भी जिब्राईल ही होता है या उदाहरणतया उस फ़रिश्ते का नाम रूहुलक़ुदुस है तो प्रतिबिंबित चित्र का नाम भी रूहुलक़ुदुस ही रखा जाता है । यह नहीं कि फ़रिश्ता मनुष्य के अन्दर घुस आता है अपितु उसका प्रतिबिम्ब मनुष्य के हृदय-रूपी दर्पण में प्रकट हो जाता है । उदाहरणस्वरूप जब तुम अत्यन्त स्वच्छ दर्पण अपने मुख के सामने रख दोगे तो उस दर्पण के क्षेत्र के अनुसार तुम्हारी शक्ल का प्रतिबिम्ब अविलम्ब उसमें पड़ेगा । यह नहीं कि तुम्हारा मुख, तुम्हारा सर गर्दन से टूटकर और पृथक होकर दर्पण में रख दिया जाएगा अपितु उस स्थान पर रहेगा जहाँ रहना चाहिए, केवल उसका प्रतिबिम्ब पड़ेगा और प्रतिबिम्ब भी प्रत्येक स्थान पर एक ही नाम पर नहीं पड़ेगा अपितु हृदय-रूपी दर्पण की जैसी-जैसी विशालता होगी उसी के अनुसार प्रभाव पड़ेगा । उदाहरणतया यदि तुम अपनी मुखाकृति आरसी के शीशे में देखना चाहो कि जो एक छोटा सा शीशा एक प्रकार की अंगूठी में लगा होता है तो यद्यपि कि उसमें भी सम्पूर्ण मुखाकृति दिखाई देगी परन्तु प्रत्येक अंग अपने मूल आकार से अत्यन्त छोटा होकर दिखाई देगा, परन्तु तुम अपनी मुखाकृति

को एक बड़े दर्पण में देखना चाहो जो तुम्हारी शक्ल के पूरे प्रतिबिम्ब के लिए पर्याप्त है तो तुम्हारी मुखाकृति के समस्त निशान और अंग मूल आकार पर दिखाई देंगे । यही उदाहरण जिब्राईल के प्रभावों का है । तुच्छ से तुच्छ पद वाले वली पर भी वह्यी का प्रभाव जिब्राईल ही डालता है । हज़रत ख़ातमुल अंबिया स.अ.व. के हृदय पर भी वह्यी के प्रभाव को वही जिब्राईल डालता रहा है, परन्तु इन दोनों वह्यों में वही उपर्युक्त अन्तर आरसी के शीशे और बड़े दर्पण का है । अर्थात यद्यपि प्रत्यक्षतया जिब्राईल की स्थिति वही है और उसके प्रभाव भी वही, परन्तु प्रत्येक स्थान पर योग्य तत्त्व एक ही विशालता और स्वच्छता की स्थिति पर नहीं । यह जो मैंने यहाँ स्वच्छता का शब्द भी लिख दिया तो यह इस बात को प्रकट करने के लिए है कि जिब्राईली प्रभावों की भिन्नता केवल संख्या के ही संबंध में नहीं अपितु विवरण के संबंध में भी है, अर्थात् हृदय की स्वच्छता जो प्रतिबिम्ब की शर्त है समस्त इल्हाम वाले लोग एक ही पद पर कभी नहीं होते । जैसे तुम देखते हो कि समस्त दर्पण एक ही स्तर की स्वच्छता कदापि नहीं रखते । कुछ दर्पण ऐसी श्रेणी के चमकदार और स्वच्छ होते हैं कि पूर्णतया जैसा कि चाहिए उन में देखने वाले की शक्ल प्रकट हो जाती है और कुछ ऐसे मलिन, गन्दे, धूसर और धूमिल जैसे होते हैं कि उनमें स्पष्ट तौर पर शक्ल दिखाई नहीं देती अपितु कुछ ऐसे बिगड़े हुए होते हैं कि यदि उदाहरण के तौर पर उनमें दोनों होंठ दिखाई दें तो नाक दिखाई नहीं देती और यदि नाक दिखाई दे गई तो आंखें दिखाई नहीं देतीं । अतः यही स्थिति हृदय-रूपी दर्पण की है जो नितान्त श्रेणी का उज्ज्वल हृदय है उसमें उज्जवल तौर पर प्रतिबिम्ब होता है और जो कुछ गन्दा है उसमें उतना ही गन्दा दिखाई देता है । कामिल और पूर्ण तौर पर यह स्वच्छता आँहज़रत स.अ.व. के हृदय को प्राप्त है । ऐसी स्वच्छता किसी अन्य हृदय को कदापि प्राप्त नहीं ।

यहाँ इस रहस्य का वर्णन करना भी आवश्यक है कि ख़ुदा तआला जो समस्त कारणों का कारण है जिसके अस्तित्व के साथ समस्त अस्तित्वों का सिलसिला संलग्न है । जब कभी वह पोषकता, प्रशिक्षण अथवा प्रकोपी तौर पर किसी मामले को उत्पन्न करने हेतु इरादे के साथ कोई गति करता है तो वह गति यदि कामिल और पूर्ण तौर पर हो तो

सम्पूर्ण विद्यमान पदार्थों की गति के लिए अनिवार्य होती है और यदि कुछ शुयून की दृष्टि से अर्थात् आंशिक गति हो तो उसी के अनुसार संसार के कुछ भागों में गति उत्पन्न हो जाती है । मूल वास्तविकता यह है कि ख़ुदा तआला के साथ उसकी समस्त सृष्टि और सम्पूर्ण संसारों का क्षेत्र जो उस क्षेत्र के अनुरूप है जो शरीर को प्राण से होता है और जैसे शरीर के समस्त अंग आत्मा के इरादों के अधीन होते हैं और जिस ओर आत्मा (रूह) झुकती है उसी ओर वे झुक जाते हैं । यही संबंध ख़ुदा तआला और उसकी सृष्टियों में पाया जाता है । यद्यपि मैं 'फ़ुसूस' के लेखक की भाँति हज़रत स्वयंभू (ख़ुदा तआला) के सन्दर्भ में यह तो नहीं कहता कि-**خلق الاشياء وهوعينها** परन्तु यह अवश्य कहता हूँ कि -

خلق الاشياء وهو كعينها۔ هذا العالم كصرحٍ ممرّدٍ من قوارير وماء الطاقت العظمٰی یجری تحتها ویفعل مایرید یخیّل فی عیون قاصرة كانّها هو یحسبون الشّمس والقمر والنجوم موثراتٍ بذاتها ولا موثرالاهو۔

(अनुवाद :- पदार्थों की उत्पत्ति बिल्कुल वही है हाँ यह अवश्य कहता हूँ कि पदार्थों की उत्पत्ति उसी जैसी है । यह संसार शीशों से सुसज्जित एक महल के समान है जिसके नीचे तीव्र गति से पानी बह रहा है । ख़ुदा जो चाहता है करता है । लाचार आँखों वाला सोचता है कि यह बिल्कुल वही है जो दिखाई दे रहा है । लोग समझते हैं कि सूर्य, चन्द्र और नक्षत्र व्यक्तिगत तौर पर स्वयं प्रभावशाली हैं, जबकि प्रभावशाली केवल ख़ुदा है । - अनुवादक)

ख़ुदा तआला ने मुझ पर यह गुप्त रहस्य प्रकट कर दिया है कि यह समस्त संसार अपने सम्पूर्ण भागों सहित उस ख़ुदा के कार्यों और इरादों को पूर्ण करने के लिए वास्तव में उन अंगों की भाँति बना है जो स्वयं स्थापित नहीं अपितु हर समय उस महान आत्मा (रूह) से शक्ति पाता है। जैसे शरीर की समस्त शक्तियाँ प्राण के सहारे से ही होती हैं तथा यह संसार जो उस महान अस्तित्व के लिए अंगों के स्थान पर है । कुछ

वस्तुएँ उसमें ऐसी हैं कि जैसे उसके मुख-मंडल का प्रकाश हैं जो बाह्य और आन्तरिक तौर पर उस के इरादों के अनुसार प्रकाश का काम देती हैं और कुछ ऐसी वस्तुएँ हैं कि जैसे उसके हाथ हैं और कुछ ऐसी हैं कि जैसे उस के पैर हैं और कुछ उसकी श्वास की तरह हैं । अत: यह संसार का संकलन ख़ुदा तआला के लिए बतौर एक शरीर के है और उस शरीर की समस्त चमक-दमक और समस्त जीवन उसी रूहे आज़म (महान आत्मा) से है, जो उस को क़ायम रखने वाली है और जो कुछ उस क़ायम रखने वाले अस्तित्व में इरादे द्वारा जो गति उत्पन्न होती है वही गति उस शरीर के समस्त या कुछ अंगों में जैसी कि उस क़ायम रखने वाले अस्तित्व की आवश्यकता है उत्पन्न हो जाती है ।

इस उपर्युक्त वर्णन का चित्र दिखाने के लिए हम विचारात्मक तौर पर कल्पना कर सकते हैं कि समस्त संसारों को क़ायम रखने वाला एक ऐसा महान अस्तित्व है जिसके लिए असंख्य हाथ असंख्य पैर और प्रत्येक अंग प्रचुरता के साथ है कि संख्या से बाहर और असीम लम्बाई-चौड़ाई रखता है और मकड़ी की भाँति इस महान अस्तित्व की तारें भी हैं जो सम्पूर्ण विश्व के समस्त किनारों तक फैल रही हैं और आकर्षण का काम दे रही हैं । ये वही अंग हैं जिनका दूसरे शब्दों में आलम (संसार) नाम है । जब संसार को कायम रखने वाला कोई आंशिक या पूर्ण गति करेगा तो उसकी गति का उत्पन्न हो जाना एक अनिवार्य बात होगी । वह अपने समस्त इरादों को उन्हीं अंगों के द्वारा प्रकटन में लाएगा, न कि किसी अन्य प्रकार से । अत: यही एक साधारण समझ वाला उदाहरण इस आध्यात्मिक मामले का है कि जो कहा गया है कि सृष्टियों का प्रत्येक भाग ख़ुदा तआला के इरादों के अधीन और उसके गुप्त उद्देश्यों को अपने सेवकीय मुख-मंडल में प्रकट कर रहा है तथा पूर्ण श्रेणी की आज्ञाकारिता से उसके इरादों के मार्ग में लीन हो रहा है । यह आज्ञाकारिता इस प्रकार की कदापि नहीं है जिसका आधार केवल शासन और ज़बरदस्ती पर हो अपितु प्रत्येक वस्तु में ख़ुदा तआला की ओर एक आकर्षण पाया जाता है और स्वाभाविक तौर पर प्रत्येक कण उसकी ओर झुका हुआ प्रतीत होता है । जैसे एक अस्तित्व के विभिन्न अंग उस महान अस्तित्व के लिए बतौर अंगों के है । इसी कारण वह समस्त संसारों को क़ायम रखने वाला

कहलाता है क्योंकि जिस प्रकार प्राण अपने शरीर को क़ायम रखने वाला होता है इसी प्रकार वह समस्त सृष्टि का क़ायम रखने वाला है । यदि ऐसा न होता तो संसार की व्यवस्था बिल्कुल बिगड़ जाती ।

उस क़ायम रखने वाले का प्रत्येक इरादा चाहे वह प्रत्यक्ष है या आन्तरिक, धार्मिक है या सांसारिक, इसी सृष्टि के माध्यम से प्रकटन में आता है, अन्य कोई ऐसा इरादा नहीं कि इन माध्यमों के बिना पृथ्वी पर प्रकट होता हो । यही प्रकृति का अनादि नियम है कि जो आरंभ से बंधा हुआ चला आता है, परन्तु उन लोगों की समझ पर बहुत आश्चर्य है कि वे प्रत्यक्ष वर्षा होने के लिए जो बादलों द्वारा पृथ्वी पर होती है पानी के वाष्पीकरण के माध्यम को आवश्यक समझते हैं और बिना बादल के प्रकृति से स्वयं वर्षा का हो जाना दुर्लभ समझते हैं । परन्तु इल्हाम की वर्षा के लिए जो स्वच्छ हृदयों पर होती है, फ़रिश्तों के बादलों का माध्यम जो शरीअत की दृष्टि से आवश्यक है उस पर मूर्खता की दृष्टि से उपहास करते हैं और कहते हैं कि क्या ख़ुदा तआला फ़रिश्तों के माध्यम के बिना स्वयं इल्हाम नहीं कर सकता था । वे इस बात को स्वीकार करते हैं कि वायु के माध्यम के बिना आवाज़ सुन लेना प्रकृति के नियम के विरुद्ध है परन्तु वह वायु जो आध्यात्मिक तौर पर ख़ुदा तआला की आवाज़ को इल्हाम वालों के हृदयों तक पहुँचाती है इस प्रकृति के नियम से लापरवाह हैं । वे इस बात को मानते हैं कि प्रत्यक्ष आँखों की दृष्टि के लिए सूर्य के प्रकाश की आवश्यकता है परन्तु वे आध्यात्मिक आँखों के लिए किसी आकाशीय प्रकाश की आवश्यकता पर विश्वास नहीं रखते ।

अब जब कि यह ख़ुदा का नियम ज्ञात हो चुका है कि संसार अपनी समस्त बाह्य और आन्तरिक शक्तियों के साथ हज़रत स्वयंभू (ख़ुदा तआला) के लिए बतौर अंगों के है और प्रत्येक वस्तु अपने अपने स्थान और अवसर पर अंगों का ही काम दे रही है और ख़ुदा तआला का प्रत्येक इरादा उन्हीं अंगों के द्वारा प्रकटन में आता है, कोई इरादा उनके माध्यम के बिना प्रकटन में नहीं आता । अत: अब जानना चाहिए कि ख़ुदा तआला की वह्यी में जो पवित्र हृदयों पर उतरती है, जिब्राईल का संबंध जो इस्लामी शरीअत में एक आवश्यक मामला समझा गया और स्वीकार किया गया है, यह संबंध भी उसी सच्ची फ्लास्फी (दर्शन) पर ही

आधारित है जिसकी अभी हम चर्चा कर चुके हैं । इसका विवरण यह है कि उपर्युक्त प्रकृति के नियमानुसार यह बात आवश्यक है कि वह्यी के आने या वह्यी की योग्यता प्रदान करने के लिए भी कोई सृष्टि ख़ुदा तआला के इल्हामी और आध्यात्मिक इरादे के प्रकटन के मंच पर लाने के लिए एक अंग की भाँति बन कर सेवारत रहे जैसा कि शारीरिक इरादों को पूरा करने के लिए सेवारत है । अत: वह वही अंग है जिस को दूसरे शब्दों में जिब्राईल के नाम से नामित किया जाता है जो उस महान अस्तित्व की गति के अन्तर्गत वास्तव में एक अंग की भाँति अविलम्ब गतिशील हो जाता है अर्थात् जब ख़ुदा तआला प्रेम करने वाले हृदय की ओर प्रेम के साथ लौटता है तो उपर्युक्त नियम के अनुसार जिस का अभी वर्णन हो चुका है जिब्राईल को भी जो सांस की वायु या आँख के प्रकाश की भाँति ख़ुदा तआला से सम्बद्ध है उस ओर साथ ही गति करना पड़ती है, या यों कहो कि ख़ुदा तआला की गति के साथ ही वह भी सहसा बिना इरादा उसी प्रकार से गति में आ जाता है जैसा कि मूल की गति से छाया का हिलना स्वाभाविक तौर पर आवश्यक बात है । अत: जब जिब्राईली प्रकाश ख़ुदा तआला के आकर्षण और प्रेरणा और प्रकाशमय फूंक से गति में आ जाता है तो तुरन्त उसका प्रतिबिम्बित चित्र जिसको रूहुलक़ुदुस के नाम से नामित करना चाहिए सच्चे प्रेमी के हृदय में अंकित हो जाता है और उसके सच्चे प्रेम की एक विनती अनिवार्य ठहर जाती है। तब यह शक्ति ख़ुदा तआला की आवाज़ सुनने के लिए कान का लाभ प्रदान करती है तथा उसके चमत्कार देखने के लिए आँखों की प्रतिनिधि हो जाती है तथा उसके इल्हाम जिह्वा पर जारी होने के लिए एक ऐसी गतिशील गर्मी का काम देती है जो जिह्वा के पहिए को बलपूर्वक इल्हामी पटरी पर चलाती है । जब तक यह शक्ति उत्पन्न न हो उस समय तक मनुष्य का हृदय अंधे की भाँति होता है और जिह्वा उस रेलगाड़ी की तरह होती है जो चलने वाले इंजन से अलग पड़ी हो । परन्तु स्मरण रहे कि यह शक्ति जो रूहुलक़ुदुस कहलाती है प्रत्येक हृदय में एक समान और बराबर उत्पन्न नहीं होती अपितु जैसे मनुष्य का प्रेम पूर्ण या अपूर्ण तौर पर होता है उसी अनुमान के अनुसार यह जिब्राईली प्रकाश उस पर प्रभाव डालता है ।

यह भी स्मरण रखना चाहिए कि यह रूहुलक़ुदुस की शक्ति जो दोनों प्रेमों के मिलन से मनुष्य के हृदय में जिब्राईली प्रकाश की छाया से उत्पन्न हो जाती है उसके अस्तित्व के लिए यह बात अनिवार्य नहीं कि मनुष्य हर समय ख़ुदा तआला का पवित्र कलाम (वाणी) सुनता ही रहे या कश्फ़ी तौर पर कुछ देखता ही रहे अपितु यह तो आकाशीय प्रकाशों की प्राप्ति के लिए निकटस्थ सामान की तरह है, या यों कहो कि यह एक आध्यात्मिक प्रकाश आध्यात्मिक आँखों के देखने के लिए या एक आध्यात्मिक वायु आध्यात्मिक कानों तक आवाज़ पहुँचाने के लिए ख़ुदा की ओर से है और प्रत्यक्ष है कि जब तक कोई वस्तु सामने विद्यमान न हो अकेला प्रकाश कुछ नहीं दिखा सकता, जब तक कलाम करने वाले के मुख से कलाम न निकले अकेली वायु कानों तक कोई सूचना नहीं पहुँचा सकती । अतः यह प्रकाश अथवा वायु आध्यात्मिक ज्ञानेन्द्रियों के लिए मात्र एक आकाशीय समर्थक प्रदान किया जाता है । जैसे प्रत्यक्ष आँखों के लिए सूर्य का प्रकाश और प्रत्यक्ष कानों के लिए वायु का माध्यम नियुक्त किया गया है । जब ख़ुदा तआला का इरादा इस ओर ध्यान देता है कि अपना कलाम अपने किसी इल्हाम वाले व्यक्ति के हृदय तक पहुँचा दे तो उसकी इस बात करने की गति से तुरन्त जिब्राईली प्रकाश में इल्क़ा के लिए एक प्रकाशीय लहर या वायु की लहर या इल्हाम वाले व्यक्ति की जिह्वा को प्रेरित करने के लिए गर्मी की एक लहर उत्पन्न हो जाती है और उस लहर उत्पन्न होने या उस गर्मी से अविलम्ब वह कलाम मुल्हम (वह व्यक्ति जिसे इल्हाम होता है) की आँखों के सामने लिखा हुआ दिखाई देता है या कानों तक उसकी आवाज़ पहुँचती है या जिह्वा पर वे इल्हामी शब्द जारी होते हैं और आध्यात्मिक हवास (ज्ञानेन्द्रियों) और आध्यात्मिक प्रकाश जो इल्हाम से पूर्व एक शक्ति की तरह मिलते हैं । ये दोनों शक्तियाँ इसलिए प्रदान की जाती हैं ताकि इल्हाम के उतरने से पूर्व इल्हाम को स्वीकार करने की योग्यता उत्पन्न हो जाए क्योंकि यदि इल्हाम ऐसी स्थिति में उतारा जाता कि मुल्हम का हृदय आध्यात्मिक हवास से वंचित होता या रूहुलक़ुदुस का प्रकाश हृदय की आंख तक न पहुँचा होता तो वह अल्लाह तआला के इल्हाम को किन आँखों के पवित्र प्रकाश से देख सकता । अतः इसी आवश्यकता के कारण ये दोनों पहले से ही

मुल्हमों को प्रदान की गईं । इस खोज से दर्शक यह भी समझ लेंगे कि वह्यी के सन्दर्भ में जिब्राईल के तीन कार्य हैं ।

प्रथम - यह कि जब गर्भाशय में ऐसे व्यक्ति के अस्तित्व के लिए वीर्य पड़ता है जिस के स्वभाव को अल्लाह तआला अपनी दया की मांग से जिसमें मनुष्य के कर्म का कुछ हस्तक्षेप नहीं मुल्हम का स्वभाव बनाना चाहता है तो उस पर उसी वीर्य होने की दशा में जिब्राईली प्रकाश की छाया डाल देता है । तब ऐसे मनुष्य का स्वभाव ख़ुदा तआला की ओर से इल्हामी विशेषता उत्पन्न कर लेता है तथा उसे इल्हामी हवास प्राप्त हो जाते हैं ।

द्वितीय कार्य जिब्राईल का यह है कि जब व्यक्ति का प्रेम ख़ुदा तआला के प्रेम की छाया के अधीन आ जाता है तो अल्लाह तआला की प्रशिक्षण देने की गति के कारण जिब्राईली प्रकाश में भी एक गति उत्पन्न होकर सच्चे प्रेमी के हृदय पर वह प्रकाश जा पड़ता है अर्थात् उस प्रकाश का प्रतिबिम्ब सच्चे प्रेमी के हृदय पर पड़ कर जिब्राईल का एक प्रतिबिम्बित चित्र उसमें उत्पन्न हो जाता है जो एक प्रकाश या वायु या गर्मी का काम देता है और इल्हामी योग्यता के तौर पर मुल्हम के अन्दर रहता है । उसका एक किनारा जिब्राईल के प्रकाश में डूबा होता है तथा दूसरा मुल्हम के हृदय के अन्दर प्रवेश करता है । जिसे दूसरे शब्दों में रुहुलकुदुस या उस का चित्र कह सकते हैं ।

तृतीय - काम जिब्राईल का यह है कि जब ख़ुदा तआला की ओर से किसी कलाम का प्रकटन हो तो वायु की तरह लहर में आकर उस कलाम को हृदय के कानों तक पहुँचा देता है या प्रकाश के रंग में भड़क कर उसको दृष्टि के सामने कर देता है या गतिशील गर्मी के रंग में उत्तेजना उत्पन्न करके जिह्वा को इल्हामी शब्दों की ओर ले जाता है ।

इस स्थान पर मैं उन लोगों के भ्रम का भी निवारण करना चाहता हूँ जो इन शंकाओं और सन्देहों में घिरे हुए हैं कि वलियों और नबियों के इल्हामों और मुकाशिफ़ात को दूसरे लोगों की अपेक्षा क्या विशेषता हो सकती है, क्योंकि यदि नबियों और वलियों पर परोक्ष के मामले प्रकट होते हैं, तो दूसरे लोगों पर भी कभी-कभी प्रकट हो जाते हैं अपितु कुछ पापियों और अत्यन्त दुराचारियों को भी सच्चे स्वप्न आ जाते हैं और कुछ

निम्न स्तर के बदमाश और उपद्रवी आदमी अपने ऐसे मुकाशिफ़ात वर्णन किया करते हैं कि आख़िर वे सच्चे निकलते हैं । अतः जब कि उन लोगों के साथ जो स्वयं को नबी या किसी अन्य विशेष श्रेणी के आदमी समझते हैं ऐसे-ऐसे दुष्चरित्र व्यक्ति भी भागीदार हैं जो दुष्चरित्रताओं और बदमाशियों में चुने हुए और विश्व-विख्यात हैं तो नबियों और वलियों की क्या श्रेष्ठता शेष रही । अतः मैं इसके उत्तर में कहता हूँ कि वास्तव में यह प्रश्न जितना अपना मूल विवरण रखता है वह सब उचित और सही है तथा जिब्राईली प्रकाश का छियालीसवां भाग समस्त संसार में फैला हुआ है, जिससे कोई पापी, दुराचारी तथा निम्न स्तर का दुष्चरित्र भी बाहर नहीं, अपितु मैं यहाँ तक मानता हूँ कि अनुभव में आ चुका है कि कभी एक अत्यन्त दुराचारी स्त्री जो वैश्याओं के वर्ग में से है, जिसकी सम्पूर्ण जवानी दुराचार में ही व्यतीत हुई है, कभी सच्चा स्वप्न देख लेती है और अत्यधिक आश्चर्य यह है कि ऐसी स्त्री कभी ऐसी रात में भी जब वह भोग-विलास की अवस्था में होती है कोई स्वप्न देख लेती है और वह सच्चा निकलता है । परन्तु स्मरण रखना चाहिए कि ऐसा ही होना चाहिए था क्योंकि जिब्राईली प्रकाश सूर्य की भाँति जो उसका केन्द्र है समस्त संसार की आबादी पर उनकी योग्यतानुसार प्रभाव डाल रहा है तथा संसार में ऐसी कोई मानवीय आत्मा नहीं कि बिल्कुल अंधकारमय हो, कम से कम एक तनिक सा देश-प्रेम वास्तविक देश और वास्तविक प्रियतम से, अधम से अधम स्वभाव में भी है । इस स्थिति में नितान्त आवश्यक था कि समस्त मनुष्यों पर यहाँ तक कि उन के पागलों पर भी किसी सीमा तक जिब्राईल का प्रभाव होता और वास्तव में है भी, क्योंकि पागल भी जिन्हें जन साधारण आकृष्ट (मज्ज़ूब)[1] कहते हैं, अपनी कुछ परिस्थितियों में अपनी एक प्रकार की विरक्तता के कारण जिब्राईली प्रकाश के नीचे जा पड़ते हैं तो उनकी आन्तरिक आँखों पर उस प्रकाश की कुछ-कुछ चमक पड़ती है जिस से वह ख़ुदा तआला के गुप्त अधिकारों को कुछ-कुछ देखने लगती हैं, परन्तु ऐसे स्वप्नों या ऐसे मुकाशिफ़ात से नुबुव्वत और वलायत (वली होना) को कुछ आघात नहीं पहुँचता तथा उनकी

[1] एक प्रकार के फ़कीर जो बेसुध रहते हैं और मुख से निरर्थक बातें निकालते रहते हैं । (अनुवादक)

गरिमा में कुछ भी अन्तर नहीं आता तथा कोई आश्चर्यजनक संशय वाली घटना नहीं होती क्योंकि मध्य में एक ऐसा स्पष्ट अन्तर है जो व्यापक तौर पर प्रत्येक सद्बुद्धि रखने वाला व्यक्ति समझ सकता है और वह यह है कि विशिष्ट और सामान्य लोगों के स्वप्न और वे मुकाशिफ़ात अपने समन्वय और पृथकता के विवरण और मात्रा में कदापि समान नहीं हैं । जो लोग ख़ुदा तआला के विशिष्ट बन्दे हैं वे अद्भुत विलक्षणता के तौर पर परोक्ष की नैमत से हिस्सा प्राप्त करते हैं । संसार उन नैमतों में जो उन्हें प्रदान की जाती हैं केवल इस प्रकार का भागीदार है जैसे समय के बादशाह के ख़ज़ाने के साथ एक भिखारी जिसके पास एक दिरहम (एक छोटे और कम मूल्य के सिक्के का नाम है) है के कारण भागीदार समझा जाए, परन्तु स्पष्ट है कि इस तुच्छ भागीदारी के कारण न बादशाह की ान में कुछ कमी आ सकती है और न उस भिखारी की शान कुछ बढ़ सकती है । यदि थोड़ा सा विचार करके देखो तो यह भागीदारी का अत्यन्त छोटा सा उदाहरण एक जुगनूँ भी सूर्य के साथ रखता है । तो क्या वह इस भागीदारी के कारण सूर्य के सम्मान में से कोई भाग ले सकता है। अतः ज्ञात होना चाहिए कि वास्तव में समस्त श्रेष्ठताएँ उच्च स्तर के कौशल को ध्यान में रखते हुए, जो मात्रा और विवरण की दृष्टि से प्राप्त हो उत्पन्न होती हैं । यह नहीं कि एक अक्षर के पहचानने से व्यक्ति एक प्रकाण्ड विद्वान के पद में समानता प्राप्त कर लेगा या संयोग से कविता का एक पद बन जाने से कवियों के समान कहलाएगा । भागीदारी के छोटे उदाहरण से नीति या शासन का कोई प्रकार रिक्त नहीं । यदि एक बादशाह समस्त संसार पर शासन करता है तो ऐसा ही एक मज़दूर व्यक्ति अपनी झोंपड़ी में अपने बच्चों और पत्नी पर शासन करता है । रही यह बात कि ख़ुदा तआला ने सौभाग्यशालियों और दुर्भाग्यशालियों में भागीदारी क्यों रखी और बीज के तौर पर लापरवाहों के वर्ग को परोक्ष की नेमत का भाग क्यों दिया । इसका उत्तर यह है कि आरोप और सबूत की पूर्णता के लिए ताकि उस बीजरूपी भागीदारी के कारण प्रत्येक इन्कारी कौशलपूर्ण (ख़ुदा के पहुँचे हुए) लोगों की स्थिति का साक्षी हो जाए, क्योंकि जब वह अपने छोटे से योग्यता के क्षेत्र में उन बातों का कुछ उदाहरण देखता है जो उन कौशलपूर्ण व्यक्तियों के मुख से सुनता है ।

अतः इस थोड़ी सी झलक के कारण उसके लिए यह संभव नहीं कि अपने सच्चे हृदय से उन इल्हामी बातों को पूर्णतया असंभव समझे । अतः वह इस आध्यात्मिक विशेषता का एक थोड़ा सा उदाहरण अपने अन्दर रखने के कारण ख़ुदा तआला के इल्ज़ाम के नीचे है जिसकी दृष्टि से इन्कार करने की स्थिति में वह पकड़ा जाएगा । जैसा कि आजकल के आर्य विचार कर रहे हैं कि ख़ुदा तआला ने चारों वेदों को उतार कर इल्हामों की पंक्ति को हमेशा के लिए पूर्णरूप से लपेट दिया है । परन्तु ख़ुदा तआला की प्रकृति का नियम उन्हें दोषी ठहराता है जबकि वे स्वयं अपनी आँखों से देखते हैं कि परोक्ष की बातों के प्रकटन का क्रम अब तक जारी है । उनमें से पापी व्यक्ति भी कभी-कभी सच्चे स्वप्न देख लेते हैं । अतः स्पष्ट है कि वह ख़ुदा जिस ने अपना आध्यात्मिक लाभ उतारने से इस युग के पापियों और संसार की पूजा करने वालों को भी वंचित नहीं रखा और उन पर भी पूर्ण अनुकूलता के अभाव के बावजूद कभी-कभी लाभ की छींटें उतारता है तो अपने नेक बन्दों पर जो उसकी इच्छानुसार चलें तथा उस से पूर्णरूपेण अनुकूलता रखें क्या कुछ नहीं उतारता होगा । इस बीजरूपी भागीदारी में एक रहस्य यह है ताकि प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह कैसा ही पापी, दुराचारी अथवा निर्दयी या काफ़िर हो इस भागीदारी पर विचार करने से समझ ले कि ख़ुदा तआला ने उसे नष्ट करने के लिए उत्पन्न नहीं किया अपितु उस ने उसके अन्दर उन्नति का मार्ग रखा है और उसको भी बीज के तौर पर एक विकसित होने की शक्ति जिसमें वह आगे क़दम बढ़ा सकता है और वे स्वाभाविक तौर पर ख़ुदा तआला की नैमत के स्थाल से वंचित नहीं है। हाँ यदि स्वयं कुमार्ग का अनुसरण करके उस प्रकाश को जो उसके अन्दर रखा गया है प्रयोग में न लाकर स्वयं वंचित हो जाए और उन स्वाभाविक मार्गों का जो मुक्ति प्राप्त करने के मार्ग हैं जान-बूझ कर त्याग दे तो यह स्वयं उसका बनाया और संवारा हुआ है जिसका दुष्परिणाम उसे भुगतना पड़ेगा ।

यादध्यानी

हमने जो कुछ 'फ़तह इस्लाम' पत्रिका में ख़ुदा के कारखाने के सन्दर्भ में जो ख़ुदा तआला की ओर से हमारे सुपुर्द हुआ है पाँच शाखाओं की चर्चा करके धार्मिक निश्छल व्यक्तियों और इस्लाम से सहानुभूति रखने वालों से सहायता हेतु लिखा है उसकी ओर हमारे निश्छल और जोश रखने वाले भ्राताओं को अति शीघ्र ध्यान देना चाहिए ताकि यह समस्त कार्य भली-भाँति प्रारंभ हो जाएँ ।

लेखक

मिर्ज़ा गुलाम अहमद, क़ादियान

ज़िला गुरदासपुर

इस्लाम के विद्वानों हेतु सूचना

इस ख़ाकसार ने मसीह के समरूप के संबंध में जो कुछ लिखा है यह लेख विभिन्न तौर पर तीन पत्रिकाओं में लिखा गया है अर्थात् 'फ़तह इस्लाम', 'तौज़ीहे मराम' और 'इज़ाला औहाम' में । अत: उचित है कि जब तक कोई सज्जन इन तीनों पुस्तकों को ध्यानपूर्वक न देख लें तब तक किसी विरोधात्मक राय प्रकट करने में शीघ्रता न करें । वस्सलामो अला मनित्तबअलहुदा ।

लेखक

ख़ाकसार मिर्ज़ा गुलाम अहमद

TAUZEEH-E-MARAM (IN HINDI)

by

The Promised Messiah

Hadhrat Mirza Ghulam Ahmad (as)

Founder of the Ahmadiyya Muslim Jama'at